ISSN 2454-1249
दशमोऽङ्कः, X^th Issue
जुलाई–दिसम्बर, 2019

शिक्षास्मृतिः

अन्ताराष्ट्रिया समकक्षव्यक्ति–समीक्षिता
बहुभाषी–षाण्मासिक–शोधपत्रिका

SHIKSHA-SMRITI

(An International Peer-Reviewed
Multi-Lingual Half-Yearly Research Journal)

प्रधानसम्पादकः
प्रो. के. रविशङ्करमेनोन्

प्रबन्धसम्पादकः
प्रो. राधागोविन्दत्रिपाठी

Scanned with OKEN Scanner

दशमोऽङ्कः जुलाई-दिसम्बर,2019 ISSN :2454-1249

शिक्षास्मृतिः

अन्ताराष्ट्रिय-समकक्षव्यक्ति-समीक्षिता बहुभाषी-षाण्मासिक-शोधपत्रिका

SHIKSHA-SMRITI

(An International Peer-Reviewed Multi-Lingual Half-Yearly Research Journal)

प्रधानसम्पादकः
प्रो. के. रविशंकर मेनोन्
पूर्वसंकायाध्यक्षः, राष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठम्, तिरुपतिः,(आ.प्र.)

सम्पादिका
डॉ. आरती शर्मा
सहायकाचार्या, शिक्षाशास्त्रविभागः
श्रीलालबहादुरशास्त्री- राष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठम्, नवदेहली

सहसम्पादकाः
डॉ. सुनीलकुमारशर्मा
डॉ. परमेशकुमारशर्मा
डॉ. दिनेशकुमारयादवः
डॉ.नितिनकुमारजैनः
डॉ. इक्कुर्ति वेङ्कटेश्वर्लु
खुशबू कुमारी

प्रबन्धसम्पादकः
प्रो. राधागोविन्द त्रिपाठी
राष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठम्, शिक्षाशास्त्रविभागः, तिरुपतिः, (आ. प्र.)

प्रकाशकः
ओम शिक्षासमितिः
मातृ- आशीष, 35, राधाविहारः, श्योपुर- मोड़, प्रतापनगरम्
सांगानेरः , जयपुरम् (राजस्थानम्)–302033

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रमणिका

क्र.	पत्रम्	लेखकः	पृ.
1.	योगस्वरूपसमीक्षा	प्रो. मारकण्डेयनाथतिवारी	1
2.	अध्यापकशिक्षायां प्रयुक्तोपागमाः	डा. आरती शर्मा	4
3.	भक्तेः फल विमर्शः	डा. अमिलानन्दः	7
4.	वैदिककाले लैङ्गिकीसमानता	श्री नेहलः एन. दवे	12
5.	योगशिक्षायां प्रतिबिम्बिता स्वास्थ्यसचेतनता	अनूपविस्वासः	20
6.	संस्कृतव्याकरणस्य वैज्ञानिकत्वम्	खुशबू कुमारी	31
7.	भवभूतेः उत्तररामचरिते निहितशिक्षामनोविज्ञानतत्त्वानि	राजमणि उपाध्यायः	34
8.	शिक्षणवृत्तिः	सतीशकुमारशर्मा	39
9.	द्रव्यादिमध्ये द्रव्याणि नवैवेत्यन्वयः	गीतांजलि देइ	42
10.	जलवायु परिवर्तन : प्रभाव, कारण एवं चुनौतियाँ	डॉ. विचारी लाल मीना	51
11.	संस्कृतशिक्षण में शोध सम्भावनाएँ	डा. सुरेन्द्र महतो	57
12.	विकलांग बालकों हेतु कार्यरत स्वयंसेवी संस्थाओं की भूमिका	डा. अजय कुमार	64
13.	हिन्दी शिक्षण में निबन्ध विधा का स्वरुप	डॉ. सुनील कुमार शर्मा	73
14.	मतिज्ञान का ज्ञानमीमांसात्मक, संज्ञानात्मक, शिक्षणशास्त्रीय प्रतिमान केन्द्रित विश्लेषण	डा. नितिन कुमार जैन	78
15.	वैदिक ज्ञान का वर्तमान विश्व पर प्रभाव	रामकुमार शर्मा	85
16.	वाल्मीकीय रामायण में प्रकृति एवं पर्यावरण	डा. शिप्रा पारीक	98
17.	प्राकृत चरित साहित्य का स्वरूप और वैशिष्ट्य	राजन	102
18.	श्रद्धा	श्रद्धा तिवारी	106
19.	Teachers as Reflective Practitioner	Dr. Tamanna Kaushal	113

Scanned with OKEN Scanner

13.

हिन्दी शिक्षण में निबन्ध विधा का स्वरुप

डॉ. सुनील कुमार शर्मा

सहायकाचार्य, शिक्षाशास्त्रविभाग

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ

(मानितविश्वविद्यालय), नई दिल्ली

शोधसारांश

हिन्दी शिक्षण में जिस तरह गद्य शिक्षण, पद्य शिक्षण , व्याकरण शिक्षण, नाटक शिक्षण की भूमिका है उसी तरह भाषा सौष्ठव और अर्थ- गरिमा की दृष्टि से साहित्य की निबन्ध विधा का एक विशेष महत्त्व है। निबन्ध विधा के विकास का क्रम हिन्दी गद्य साहित्य से जुड़ा है। निबन्ध विधा का श्री गणेश प्रसिद्ध साहित्यकार भारतेन्दु और उनके सहयोगियों का प्रतिफल है। इस शोध लेख में निबन्ध का स्वरुप , अर्थ, परिभाषा, निबन्ध के भेद विशेषताए, उद्देश्य ,निबन्ध के अंगों और शिक्षण विधियों को प्रस्तुत किया गया है। हिन्दी साहित्य को जानने के जिज्ञासु पाठक अध्ययन करना चाहता तो उसके लिए हिन्दी साहित्य की अन्य विधाओं की तरह हिन्दी शिक्षण में निबन्ध विधा का स्वरुप जानना बहुत ही जरुरी है। प्रस्तुत शोध लेख छात्रों और पाठकों के लिए वर्तमान शिक्षाप्रणाली में हिन्दी साहित्य के ज्ञान को आत्मसात करने के लिए नितान्त आवश्यक है।

निबन्ध (Essay)

निबन्ध शब्द का अर्थ है – सम्यक् रुप से बंधी हुई अथवा कसी हुई रचना। आशय यह है कि निबन्ध में विचार अथवा भाव पूर्णतः एक सूत्र में बधे रहते हैं।

व्याकरणिक दृष्टि से कहा जाये तो निबन्ध का अर्थ बाँधना अर्थात् क्रमहीन विचारों को भाषा के माध्यम से क्रम प्रदान करना कल्पद्रुप के मतानुसार नि +बन्ध+ घञ्- निश्चतार्थेन विषयम् अधिकृत्य बन्धनम्। अर्थात् किसी निश्चित विषय पर विचारों को सूचीबद्ध करना निबन्ध कहलाता है। दूसरो में अर्थ में कह सकते है निबन्ध गद्य लेखन की एक विधा है । लेकिन इस शब्द का प्रयोग किसी विषय की तार्किक और बौद्धिक विवेचना करने वाले लेखों के लिए भी किया जाता है। निबंध के पर्याय रूप में सन्दर्भ, रचना और प्रस्ताव का भी उल्लेख किया जाता है। लेकिन साहित्यिक आलोचना में सर्वाधिक प्रचलित शब्द निबंध ही है। इसे अंग्रेजी के Composition (रचना) और Essay (निबन्ध)के अर्थ में ग्रहण किया जाता है।

सुप्रसिद्ध हिन्दी साहित्यकार आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के अनुसार 'संस्कृत ' में भी निबंध का साहित्य है। प्राचीन संस्कृत साहित्य के उन निबंधों में धर्मशास्त्रीय सिद्धांतों की तार्किक व्याख्या की जाती थी। उनमें व्यक्तित्व की विशेषता नहीं होती थी। किन्तु वर्तमान काल के निबंध संस्कृत के निबंधों से ठीक उलटे हैं। उनमें व्यक्तित्व या वैयक्तिकता का गुण सर्वप्रधान है।

इतिहास-बोध परम्परा की रूढ़ियों से मनुष्य के व्यक्तित्व को मुक्त करता है। निबंध की विधा का संबंध इसी इतिहास-बोध से है। यही कारण है कि निबंध की प्रधान विशेषता व्यक्तित्व का प्रकाशन है।

Scanned with OKEN Scanner

शिक्षाप्रियदर्शिनी

अन्ताराष्ट्रिय-समकक्षव्यक्ति-समीक्षिता बहुभाषी-षाण्मासिक-शोधपत्रिका

SHIKSHA-PRIYADARSHINI

(An International Peer-Reviewed Multi-Lingual Half-Yearly Research Journal)

प्रधानसम्पादकः

प्रो. चाँदकिरणसलूजा

निदेशकः, संस्कृतसंवर्धनप्रतिष्ठानम्, नवदेहली

सम्पादकः

डॉ. सुनील कुमार शर्मा

सहायकाचार्यः, शिक्षाशास्त्रविभागः

श्रीलालबहादुरशास्त्री- राष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठम्, नवदेहली

सहसम्पादकाः

डॉ. आरती शर्मा

डॉ. परमेशकुमारशर्मा

डॉ. दिनेशकुमारयादवः

डॉ.नितिनकुमारजैनः

प्रज्ञा

खुशबू कुमारी

प्रबन्धसम्पादकः

प्रो. पवनकुमार

शिक्षाशास्त्रविभागः

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्, एकलव्यपरिसरः, अगरलता

प्रकाशकः

संस्कृतसंस्कृतिविकाससंस्थानम्

बाड़ी, धौलपुरम्, राजस्थानम् -328021

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रमणिका

क्र.	लेखक	पत्रम्	पृ.
1.	डा. आरती शर्मा	संस्कृतशिक्षणे वाक्यविज्ञानम्	1
2.	डा. बि. वेङ्कटलक्ष्मीनारायणः	पाठ्यचर्यायाः निर्माणावसरे शिक्षकस्य पात्रता	5
3.	डा. नवीन शर्मा	कर्मसिद्धान्तस्य मनोवैज्ञानिकत्वम्	9
4.	डा. इक्कुर्ति वेङ्कटेश्वर्लुः	भारतीयप्राचीनमौखिकविधिः	14
5.	डॉ. एल्. सविता आर्या	समर्थसूत्रे सुभाषितधिया सामर्थ्यविचारः	17
6.	डा. नितिनकुमारजैनः लक्ष्मी	विद्यालयीयशिक्षा	20
7.	अंशु गुप्ता	धर्ममीमांसा	24
8.	जगत् ज्योति पात्रः	आत्मतत्त्वनिर्वचनम्	30
9.	खुशबू कुमारी	आङ्गलभाषायां प्रयुक्तानां शब्दानामर्थदृष्ट्या धातूमूलकता	36
10.	कुलदीपपारीकः	भाषाधिगमप्रक्रियायां शब्दानामावश्यकता	39
11.	स्नेहलता	महाविद्यालयीयसंस्कृतशिक्षणे निर्देशनपरामर्शयोः उपादेयता	43
12.	डा. अजय कुमार	हिन्दी शिक्षण: कविता(पद्य)शिक्षण पाठ योजना निर्माण प्रक्रिया के संदर्भ	46
13.	डा. सुनील कुमार शर्मा	प्राचीन भारतीय परम्परा में पर्यावरणीय दृष्टि	53
14.	डा. मृत्युञ्जय तिवारी	नाक्षत्रिक कृत्याकृत्य विमर्श	59
15.	राजन	प्राकृत अपभ्रंश "एक परिचय"	65
16.	राजमणि उपाध्याय	भवभूति के रूपकशिक्षणाधिगम में संरचनात्मक आकलन	68
17.	Dr. Deep Shikha Mittal	Effect of Social Environment on Adjustment and Anxiety Level of Students	73
18.	Dr. Jitendra	Learning to Teach: Communication Skills with Reference to Practice Teaching	76

Scanned with OKEN Scanner

13.

प्राचीन भारतीय परम्परा में पर्यावरणीय दृष्टि

डॉ. सुनील कुमार शर्मा
सहायकाचार्य, शिक्षाशास्त्रविभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ
(मानितविश्वविद्यालय), नई दिल्ली

शोध सारांश

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखा जाये तो पर्यावरण की समस्या एक जटिल समस्या के रुप में दिखाई दे रही है। फलस्वरुप पर्यावरण प्रदूषण की समस्या ने सम्पूर्ण मानव जीवन को अस्त- व्यस्त कर दिया है। पर्यावरण प्रदूषण का इतना दुष्प्रभाव होने लगा कि अनेकानेक स्वास्थ्य संम्बन्धी समस्याएँ आने लगी और अनेकानेक नई -नई महामारियों का जन्म होने लगा। इसलिए प्राचीन ग्रन्थों में पर्यावरण को प्रदूषण रहित रखने के अनेक मार्ग बताएं गए हैं। प्रस्तुत शोध लेख में **प्राचीन भारतीय परम्परा में पर्यावरणीय दृष्टि** इस विषय को लेकर बताने का प्रयास किया है जो कि वर्तमान समय में अत्यन्त आवश्यक विषय बन चुका है।

आज पर्यावरण की चर्चा सर्वत्र है। सामान्य व्यक्ति से लेकर देश के बुद्धिजीवी तक और देश ही नहीं दुनियाँ के बुद्धिजीवी भी इस विषय के बारे में सोचते है और विचार करते हैं। पर्यावरण के विषय में विचार करने की आवश्यकता सभी को अनुभव होने लगी है। बदलती प्रकृति, नित परिवर्तन होता मौसम, सर्दी के समय सर्दी न होना, गर्मी के समय अधिक गर्मी होना, वर्षाकाल का आगमन आगे-पीछे होना ऐसे अनेक अनुभव सोचने पर मजबूर करते हैं। ऐसा क्यों हो रहा है जब इस पर विचार होता है तो उत्तर आता है कि समय बदल गया है। यह भी कह सकते है कि परिवर्तन प्रकृति का नियम है। परंतु इस बात का विचार यदि किया जाए कि प्रकृति में ऐसा बदल क्यों आया है ? प्रकृति सभी का कल्याण करती है। परंतु प्रकृति मानव के विनाश के विषय में कैसे सोच सकती है?

प्रकृति विनाश की बजाय कल्याण कारक ही रहे ऐसा ध्यान में रख कर भारतीय ऋषि-मनीषियों ने चिंतन किया। इस चिंतन को भारतीय वाङ्गमय में उल्लेखित किया इस चिंतन को हम प्राचीन भारतीय परम्परा में पर्यावरणीय दृष्टि भी कह सकते हैं जो इस प्रकीर है -

अथर्ववेद के भूमि सूक्त में पर्यावरणीय मूल्यों का विधान है। मनुष्य धरित्री (भूमि) से कहता है, "मैं आपके उत्खनन से कुछ प्राप्त कर रहा हूँ, पर मैं ऐसा कभी न करूं कि इस प्रक्रिया से आपके हृदय अर्थात् मर्मस्थल पर चोट पहुँच जाए।" अर्थात् उत्खनन करते समय दोहन करना शोषण करना नहीं।

दुनियाँ में जहां-जहां अत्यधिक उत्खनन हुआ है वहाँ-वहाँ प्रकृति में परिवर्तन हुआ है, कहीं जल संक्रट तो कहीं अत्यधिक बाढ़ की स्थिति बनी है।

ऋग्वेद में प्रार्थना की गई है कि वृक्ष, जल, आकाश एवं पर्यावरण की वेणीयाँ तथा वनस्पतियों से भरे पूरे वन और पर्व हमारा संरक्षण करें। ऋग्वेद में उल्लेखित है, **'वनं आस्थाप्यध्वम्'** अर्थात् वन में वनस्पतियाँ उगाओ, वृक्षारोपण करो। वानस्पतिक संपदा के भंडार में वृद्धि करो, उसे घटाओ नहीं। यजुर्वेद के एक सूत्र में कहा गया है कि हे वनस्पति ! इस धारदार कुल्हाड़े से अपने महान सौभाग्य के लिए मैंने तुम्हें काटा अवश्य है, परंतु तेरा उपयोग हम सहस्र अंकुर होते हुए करेंगे।

जीवन यापन के लिए यदि लकड़ी की आवश्यकता है तो वृक्ष न काटकर उसकी शाखाओं का उपयोग करना, उसमें भी ऊपर की शाखाएँ नहीं केवल नीचे की शाखाएँ ताकि हमारे प्रयोग लायक लकड़ी भी मिल जाएँ और पेड़ के अस्तित्व बने रहने के साथ तना भी बढ़ता रहे।

Scanned with OKEN Scanner

ISSN No : 2581-6306 website : http://shisrrj.com

Impact Factor : 5.2

Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal

Certificate of Publication

Ref No: SHISRRJ/Certificate/1026 25 Jan 2020

This is to certify that the research paper entitled

हिन्दी शिक्षण में कविता शिक्षण का स्वरुप

By

डॉ. सुनील कुमार शर्मा

सहायकाचार्य, शिक्षाशास्त्रविभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ,(मानितविश्वविद्यालय),नई दिल्ली

After review is found suitable and has been published in Volume 3, Issue 1, January-February-2020 in Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal (SHISRRJ) [Page No 124-131].

This Paper can be downloaded from the following SHISRRJ website link

http://shisrrj.com/SHISRRJ203321

SHISRRJ Team wishes all the best for bright future

Editor in Chief
SHISRRJ

Associate Editor
SHISRRJ

Peer Reviewed and Refereed International Journal

Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 SHISRRJ | Volume 3 | Issue 1 | ISSN : 2581- 6306

हिन्दी शिक्षण में कविता शिक्षण का स्वरुप

डॉ. सुनील कुमार शर्मा
सहायकाचार्य,शिक्षाशास्त्रविभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ
(मानितविश्वविद्यालय),नई दिल्ली

शोध-सारांश (Research-Abstract) हिन्दी शिक्षण के अन्तर्गत अनेक विधाएँ है प्रत्येक विधा की पठन- पाठन की शैली अलग अलग अलग है। प्रस्तुत शोध लेख में कविता शिक्षण के लिए कौन-कौन से स्मरणीय बिन्दू है जिनको ध्यान में रखकर अध्ययन किया जा सके एवं कराया जा सकें। प्रस्तुत लेख में भूमिका, कविता शिक्षण की शिक्षण परिभाषा, कविता शिक्षण का महत्त्व, प्राथमिक, माध्यमिक, उच्चमाध्यमिक स्तरानुसार,कविता शिक्षण के उद्देश्य, कविता शिक्षण की विधियों को प्रस्तुत किया गया है।

मुख्य शब्द – हिन्दी, शिक्षण, विधा, पाठक, भाषा, साहित्य, शिक्षण,कविता, शैली

भूमिका– काव्य के प्रमुखतया दो रुप माने जाते हैं- गद्यकाव्य एवं पद्यकाव्य। पद्य काव्य भव प्रधान होता है। इसके अन्तर्गत भावना, कल्पना तथा बुद्धि तीनों पक्षों का समावेश होता है। सामान्य रुप से जो रचना छंदोबद्ध होती है उसे कविता कहा जाता है इसमें गति, यति लय आदि का ध्यान रखा जाता है। परन्तु आज की नई कविता में छंद या लय का ध्यान नहीं रखा जाता। अर्थात् कविता छंदोबद्ध भी हो जाती है और छंद रहित भी प्रत्येक पद्य रचना कविता हो सकती है परन्तु प्रत्येक कविता पद्य हो , यह आवश्यक नहीं। मनुष्य की वाणी जो शब्द- विधान करती है वही कविता है। कविता का आरम्भ वीरगाथा काल से माना जाता है।

संस्कृत मे सामान्यतः कवि के कर्म को ही काव्य कहा जाता है। अंग्रेजी में कविता के लिए Poetry शब्द का प्रयोग होता हे। इसका सीधा सम्बन्ध Poet के साथ है Poet शब्द का अर्थ निर्माता सर्जन है और (Poetry) उसका निर्माण या सर्जन है। भारतीय आचार्यों ने काव्य की परिभाषा करते समय मुख्यतः उसकी आत्मा का ध्यान रखा है, जबकि पाश्चात्य आचार्यों ने उसके भाव, कल्पना,बुद्धि, शैली आदि तत्त्वों का ध्यानरखकर उसकी परिभाषाएँ गठित की हैं जो इस प्रकार हैं-

Scanned with OKEN Scanner

ISSN 2454-1230

द्वादशोऽङ्कः, XII[th] Issue

जुलाई-दिसम्बर, 2020

July-December 2020

शिक्षाप्रियदर्शिनी

अन्ताराष्ट्रिया समकक्षव्यक्ति-समीक्षिता

बहुभाषी-षाण्मासिक-शोधपत्रिका

SHIKSHA PRIYADARSHINI

(An International Peer-Reviewed Multi-Lingual)
Half-Yearly Research Journal)

मुख्यसंरक्षकः

प्रो. श्रीनिवासः वरखेडी

प्रधानसम्पादकः

प्रो. चांदकिरणसलूजा

प्रबन्धसम्पादकः

प्रो. पवनकुमारः

Scanned with OKEN Scanner

शिक्षाप्रियदर्शिनी (अङ्कः 12)

अनुक्रमणिका

	प्रधान सम्पादकीय	viii
	प्रबन्ध सम्पादकीय	ix
1.	प्राचीनभारतीयशिक्षाव्यवस्था डा.सोमनाथदाशः	1
2.	महाकवि-कालिदासकवितायां व्यङ्ग्यार्थवैभवम् डा. बि. कामाक्षम्मा	11
3.	सीताहरणनाटके पर्यावरणचेतना डॉ. सुनीलकुमारशर्मा	15
4.	संस्कृतभाषाशिक्षणे उपयुज्यमानाः शिक्षणविधयः डॉ.बि.वेङ्कटलक्ष्मीनारायणः	23
5.	नारायभट्टतिरेः अधिगमविचारः डा. इक्कुर्ति वेङ्कटेश्वर्लुः	31
6.	भाषा कौशलानि भाषाशिक्षा च डा. रमणमिश्रः	38
7.	शिक्षाशास्त्रदृष्ट्या ज्योतिषशिक्षणविधीनां प्रयोगात्मकमध्ययनम् डॉ. मुकेश शर्मा	45
8.	तर्कसङ्ग्रहदिशा पदार्थत्त्वद्रव्यत्त्वनिरूपणपुरस्सरम् पृथिव्यप्तेजवाय्वादिद्रव्यनिरूपणम् रागिनी शर्मा	61
9.	वृत्तिनिरूपणम् जगत् ज्योति पात्रः	69
10.	प्रशिक्षणार्थीनां प्रशिक्षणसन्दर्भे संघर्षसमाधानयोग्यता सोनिया साहु	77
11.	ऑनलाइन शिक्षा : कुछ पूर्वधारणाएं एवं प्रवृत्तियां डा. नितिन कुमार जैन	83
12.	बाल्यकिशोरावस्था में अभिप्रेरणा डा. कृष्णकान्त तिवारी	91
13.	प्रभावित विश्व : परिवर्तित शिक्षा डा. दाताराम पाठक	99
14.	सृष्टि-उत्पत्ति श्रद्धा तिवारी	107

Scanned with OKEN Scanner

शिक्षाप्रियदर्शिनी
(अन्ताराष्ट्रिया मान्यकसञ्जनि-समीक्षिता बहुभाषीयशोधपत्रिका)
इदम्ोऽङ्कः जुलाई-दिसम्बर, 2020 ISSN : 2454-1230

3.

सीताहरणनाटके पर्यावरणचेतना

डॉ. सुनीलकुमारशर्मा
सहायकाचार्यः, शिक्षाशास्त्रविभागः
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविश्वविद्यालयः, नवदेहली

कविः सर्वदा नीलनभोमण्डले जिज्ञासुपक्षिसमः काव्यरचनायाः आशाबन्धं धृत्वा अटति इतस्ततः। तन्मनः असीमनीलाकाशे स्वाधीनविहङ्ग इव भ्रमणशीलम् । तत् देशाद्देशान्तरं सागरात्सागरान्तरं परिभ्रमति । नीलगगनस्य निःसीमपथे, द्युलोकस्य आलोकस्रोतसि, लीलाचञ्चलमेघालोके, शैलराजेः चित्रपटल- समूहे, कुञ्जवनस्य हरितदृश्ये, नगरस्य सौधचूले, ग्राम्यतटिन्याः तीरदेशे, यन्त्रपुर्याः बाष्पधूमे, छायाहीनमरुस्थाने च सर्वत्र परिक्रमते । मधुलुब्धमधुकर इव कविः कुसुमवक्षसि स्थितस्य रसस्यास्वादनं करोति । सः न केवलं पुष्पेभ्योऽपि तु चन्द्रस्य ज्योत्स्नायाः, कोकिलस्य मृदुकर्णान्तिकस्वनेभ्यः, गानरतजलप्रपातेभ्यः, अपि रसमास्वादयति ।

विश्वस्मिन् विश्वे विशालसाहित्यसाम्राज्ये आंग्लकविः शेक्स्पियरमहाभागोऽन्तर्जगतः सर्वश्रेष्ठरचयिता, कविकुलललामभूतः कालिदासस्तु बाह्यजगतः। बाह्यजगतस्सजीव-रमणीय-भव्य-स्वाभाविक-प्राकृतिक-चित्रणपरकं कालिदासीयमनोरमं कृतिरत्नं साहित्यजगत्यद्वितीयम् । भूमितः गगनं यावत् नदी-पर्वत-निर्झरिणी-पशुपक्षि-कीट-तरु-लतादीनां सर्वेषामालंकारिकशैल्या प्रतिपादनं कालिदासीयसाहित्यस्य स्वतन्त्रवैशिष्ट्यम् । मृग-मयूर-मधुकर-मराल-मीनादीनां वर्णनं सुन्दरतया कालिदासेन विहितम् । चक्रवाक-चकोर-सारस-क्रौञ्च-कुररी-कादम्ब-कारण्डव-बलाका-सुपर्ण-गृध्र-शुक-सारिका-पारावत-हारितादिपक्षिणोऽपि तत्र उद्धृताः । सिंह-गज-अश्व-वराह-माहिष-वृष-गवय-शरभ-कपि-वक-गोधा-विडाल-मूषक-शिवा-ऋक्ष-सर्पादयः वन्यपशवोऽपि तस्य साहित्ये वाणताः । वृक्षलतावल्लरीषु अतिमुक्त-अशोक-असन-अक्षोट-अर्जुन-अर्क-आम्र-इङ्गुदी-इक्षु-उदुम्बर-एला-अगुरु-कालागुरु-ककुभ- कदम्ब- कदली- कन्दली-कमल- कल्हार-काणकार-कालीयक-काश-किंशुक-कीचक-कुंकुम-कुन्द-कुटज-कुमुद-कुरबक-कुसम्भ-केतकी-केशर –कोविदार –कल्पतरु –खजरूर –चन्दन –जम्बू –चिञ्चा -तित्तिणी-ताली- तमाल- ताम्बुली- तिलक- नमेरु – देवदारु-नलिनी- नारिकेल- निचुल-नीप-पलाश-पाटल-पुन्नाग-पूगा-प्रियङ्गु-प्रियाल-बन्धूक-बिम्ब-भूर्ज-पारिजात- मन्दार-

Scanned with OKEN Scanner

ISSN 2454-1230

त्रयोदशोऽङ्कः, XIII" Issue

जनवरी-जून, 2021

January-June 2021

शिक्षाप्रियदर्शिनी

अन्ताराष्ट्रिया समकक्षव्यक्ति-समीक्षिता

बहुभाषी-षाण्मासिक-शोधपत्रिका

SHIKSHA PRIYADARSHINI

(An International Peer-Reviewed Multi-Lingual)
Half-Yearly Research Journal)

मुख्यसंरक्षक:
प्रो. श्रीनिवास: वरखेडी

प्रधानसम्पादक:
प्रो. चांदकिरणसलूजा

प्रबन्धसम्पादक:
प्रो. पवनकुमार:

Scanned with OKEN Scanner

शिक्षाप्रियदर्शिनी (अङ्कः 13)

अनुक्रमणिका

	प्रबन्ध सम्पादकीय	viii
1.	कबीर के साहित्य एवं श्रीमद्भगवद्गीता में वर्णित कर्मयोग के दोहे एवं श्लोकों का व्यक्ति के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव का अध्ययन प्रो. हरिहृदय अवस्थी एवं अमर नाथ	1
2.	श्रेष्ठ अध्ययन प्रवृत्ति प्रो. नीलाभ तिवारी एवं अनिल कुमार तिवारी	10
3.	प्रयाजयागः डॉ. शम्भु कुमार झा	13
4.	राजस्थान की नौवें दशक की हिन्दी कविता डॉ. अशोक कुमार शर्मा	21
5.	जैनेन्द्र व्याकरण में संज्ञाविधान डॉ जितेंद्र कुमार	33
6.	पाणिनीय व्याकरण में स्थानिवद्भाव : एक विश्लेषण डा रवि प्रभात एवं सुचेता	38
7.	मनोवैज्ञानिक अनुसंधान की प्रकृति एवं क्षेत्र डॉ. आरती शर्मा	42
8.	श्रीमद्भगवद्गीता में व्यक्तित्व डॉ. सुरेन्द्र महतो एवं डा. सुनीलकुमारशर्मा	47
9.	अधिगमाकलनम् डा. इक्कुर्ति वेङ्कटेश्वर्लुः	54
10.	वैकल्पिक शिक्षाः प्रकृति, व्यूह रचनाएँ, संभावनाएं और विकास का परिप्रेक्ष्य डा. अजय कुमार	60
11.	माध्यमिकविद्यार्थिनां परास्मृतेः विश्लेषणात्मकमध्ययनम् डा. नितिन कुमार जैन एवं रेनु	71
12.	भारतीयदर्शने मूल्यानि डॉ. चक्रधरमेहेरः	80

Scanned with OKEN Scanner

शिक्षाप्रियदर्शिनी
अन्ताराष्ट्रिया समकक्षव्यक्ति-समीक्षिता बहुभाषीयशोधपत्रिका, त्रयोदशोऽङ्कः, जनवरी-जून, 2021, ISSN : 2454-1230

8.

श्रीमद्भगवद्गीता में व्यक्तित्व

डॉ. सुरेन्द्र महतो, सहायक आचार्य
डा. सुनीलकुमारशर्मा, सहायक आचार्य
शिक्षापीठ, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

शोधसारांश

व्यक्तित्व से व्यक्ति की समाज में पहचान होती है। व्यक्तित्व व्यक्ति के समग्र गुण और दोषों को अभिव्यक्त करता है। पाश्चात्य मनोवैज्ञानिकों के अनुसार इसके कई भेद किये गये हैं जो विभिन्न तर्कों से सम्पुष्ट है। शिक्षा मनोविज्ञान में भी व्यक्तित्व को प्रमुख स्थान दिया जाता है। जबकि भारतीय वाङ्मय में अप्रत्यक्ष रूप से व्यक्तित्व के ही नहीं मनोविज्ञान के विभिन्न तथ्यों के विषय में गम्भीरतापूर्वक चिन्तन किया गया है। जिनमें से श्रीमद्भगवद्गीता को सम्पूर्ण विश्व साहित्य में अग्रगण्य स्थान प्राप्त है। श्रीमद्भगवद्गीता में भी शिक्षा मनोविज्ञान के विभिन्न तथ्य जैसे - बुद्धि, व्यक्तित्व, सीखना, स्मृति, विस्मृति, ध्यान, स्वप्न, जिज्ञासा इत्यादि प्राप्त होते है। इनमें से 'श्रीमद्भगमद्गीता में व्यक्तित्व तथा इसके प्रकारों' का विश्लेषण किया गया है जिसमें मुख्य रूप से सात्विक, राजस एवं तामस गुणों के आधार पर व्यक्तित्व के तीन प्रकार की व्याख्या प्राप्त होती है जिसे व्यक्ति के विभिन्न आहार-व्यवहार के आधार पर सोदाहरण व्याख्या इस पत्र में की गयी है।

विषय प्रवेश

मनुष्य स्वभाव से जिज्ञासु एवं चिन्तनशील प्राणी है। जिज्ञासा पूर्ति के लिए वे इधर-उधर भ्रमण करते रहे हैं परिणामस्वरूप भोजन संग्रह करने से प्रारम्भ कर चाँद-तारों तक पहुँच बना लिये हैं। मानव सृष्टि की सभी प्राणियों में सबसे अधिक बुद्धिमान है अर्थात् यूँ कह सकते हैं कि बुद्धि ही एक ऐसा विशिष्ट तत्त्व मानव में अन्तर्निहित है जिसके कारण उसका व्यक्तित्व उन्हें एक दूसरे से पृथक करता है। कहा भी गया है-''बुद्धिर्यस्य बलं तस्य।'' अर्थात् बुद्धिमान व्यक्ति विकास का परिचायक है ठीक इसी प्रकार किसी भी समाज या राष्ट्र के विकास का परिचायक वहाँ की शिक्षा व्यवस्था है। जो उनके आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक उन्नति को गति प्रदान करती है। अर्थात् शिक्षा की आवश्यकता एवं सार्थकता स्वतः सिद्ध है। सभी क्षेत्रें में विकास अनवरत गति से चल रहा है परिणामतः शिक्षा प्रक्रिया भी इस से अछूता नही है। शिक्षा शब्द संज्ञा एवं क्रिया दोनों रूपों में प्रयुक्त होती है। शिक्षा जब संज्ञा के रूप में प्रयोग किया जाता है तो उसे एक विषय के रूप में स्वीकार किया जाता है जो अभी विकासशील है। अपितु जब यह प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किया जाता है तो यह पूर्व विकसित रूप में हमारे समक्ष है। यहाँ हम शिक्षा का एक विषय के रूप में अध्ययन करेंगे। शिक्षा अथवा शिक्षाशास्त्र एक नवीन संकल्पना है जो शिक्षा प्रक्रिया के विविध क्षेत्रें सीखना-सिखाना, मनोवैज्ञानिक,

मिटेड, नई
हरी घाट,
Scanned with OKEN Scanner

ISSN No : 2581-6306
website : http://shisrrj.co
Impact Factor : 5.2

Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal

Certificate of Publication

Ref : SHISRRJ/Certificate/Volume 4/Issue 2/456 10-Apr-2021

This is to certify that the research paper entitled

सामाजिक मनोविज्ञान में प्रयुक्त विधियाँ

डॉ. सुनील कुमार शर्मा
सहायकाचार्य, शिक्षाशास्त्रविभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री, राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली। (39)

After review is found suitable and has been published in the Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal(SHISRRJ), Volume 4, Issue 2, March-April 2021. [Page No : 119-125]

This Paper can be downloaded from the following SHISRRJ website link

http://shisrrj.com/SHISRRJ214221

SHISRRJ Team wishes all the best for bright future

Editor in Chief
SHISRRJ

Associate Editor
SHISRRJ

Peer Reviewed and Refereed International Journal

Scanned with OKEN Scanner

सामाजिक मनोविज्ञान में प्रयुक्त विधियाँ

डॉ. सुनील कुमार शर्मा
सहायकाचार्य, शिक्षाशास्त्रविभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री,
राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।

Article Info
Volume 4, Issue 2
Page Number : 119-125
Publication Issue :
March-April-2021
Article History
Accepted : 01 April 2021
Published : 10 April 2021

सारांश – प्रयोगात्मक विधि में क्षेत्र प्रयोग तथा प्रयोगशाला आधारित प्रयोग सम्मिलित है। क्षेत्र अध्ययन प्रायः क्षेत्र प्रयोगों के लिए सम्बन्धित चरों की महत्त्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध होती है। मनोविज्ञान में प्रयोग दो प्रकार से किये जाते हैं- गुणात्मक तथा परिणामात्मक। गुणात्मक प्रयोगों का मुख्य उद्देश्य प्रयोगों द्वारा मनोवैज्ञानिक तथ्यों की व्याख्या करना, जबकि मात्रात्मक प्रयोगों का उद्देश्य मापन करना है, मात्रात्मक प्रयोगों में मुख्यतः सांख्यिकीय विधियों का उपयोग किया जाता है।

मुख्यशब्द – प्रयोगात्मक, विधि, परिणामात्मक, गुणात्मक, सामाजिक, शारीरिक, बौद्धिक।

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी है, क्योंकि उसे अपने सामाजिक, शारीरिक, बौद्धिक तथा सांस्कृतिक अस्तित्त्व के लिए समाज पर निर्भर रहना पड़ता है। इसे बनाये रखने के लिए आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए आस-पास के अनेक व्यक्तियों तथा समूह से अन्तः क्रियात्मक सम्बन्ध स्थापित करना पड़ता है, व्यक्ति पर इन विचारों, क्रियाओं और व्यवहारों का निरन्तर प्रभाव पड़ता है और जो विज्ञान व्यक्ति के व्यवहारों पर सामाजिक परिस्थितियों के प्रभावों का विश्लेषण तथा अध्ययन करता है, सामाजिक मनोविज्ञान कहलाता है। प्रत्येक व्यक्ति के अलग-अलग विचार, भावनायें, विश्वास, आदर्श एवं कार्यविधियाँ होती हैं, अगर ध्यान से देखा जाय तो इन विषयों की दृष्टि से समूह के सदस्यों में काफी समानता होती है। इन समानताओं के कारणों का पता लगाना सामाजिक मनोविज्ञान का ही कार्य है। यह विज्ञान इन्हीं समानताओं को जन्म देने वाली शक्तियों का विश्लेषण एवं विवरण प्रस्तुत करता है। इस कार्य के लिए सामाजिक मनोविज्ञान को एक ओर समाज की प्रकृति, संरचना, संगठन और अन्तः क्रियात्मक प्रक्रियाओं को समझाना और सुलझाना पड़ता है, तो दूसरी ओर व्यक्ति के मानसिक व शारीरिक आधारों का भी अध्ययन करना होता है। सामाजिक मनोविज्ञान अनेक वैज्ञानिक विधियों का

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

Scanned with OKEN Scanner

Print ISSN: 2395-6011, Online ISSN: 2395-602X UGC Approved Journal [Journal No : 64011]

IJSRST

International Journal of Scientific Research in Science and Technology

Scientific Journal Impact Factor = 7.214
Website : www.ijsrst.com

Ref : IJSRST/Certificate/1260 30 Sep 2020

Certificate of Publication

This is to certify that the research paper entitled

संवेग एवं संवेगात्मक विकास

डॉ. सुनील कुमार शर्मा
सहायकाचार्य, शिक्षाशास्त्रविभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री, राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।

After review is found suitable and has been published in Volume 7, Issue 5, September-October-2020 in International Journal of Scientific Research in Science and Technology [Page No 368-371]

This Paper can be downloaded from the following IJSRST website link
http://ijsrst.com/IJSRST2075981
IJSRST Team wishes all the best for bright future

Editor in Chief
International Journal of Scientific Research in Science and Technology

Associate Editor

Peer Reviewed and Multidisciplinary International Journal

Scanned with OKEN Scanner

IJSRST

International Journal of Scientific Research in Science and Technology
Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X (www.ijsrst.com)

संवेग एवं संवेगात्मक विकास

डॉ. सुनील कुमार शर्मा
सहायकाचार्य, शिक्षाशास्त्रविभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री,
राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।

Article Info
Volume 7, Issue 5
Page Number: 368-371
Publication Issue :
September-October-2020
Article History
Accepted : 15 Sep 2020
Published : 30 Sep 2020

शोधसार (Abstract)- "Your emotions are the salves to your thoughts, and you are the slaves to your emotions". (Elizabeth Gilbert) मानव जीवन में संवेगों का अत्यधिक महत्त्वपूर्ण स्थान है। हर मनुष्य अपने जीवन में कई तरह के संवेगों का अनुभव करता है जैसे क्रोध, भय, हर्ष, प्रेम, उत्सुकता इत्यादि। ये सभी अनुभूतियाँ संवेग की अवस्था है। अतः संवेग एक उत्तेजित अवस्था है। संवेगों की प्रकृति भावात्मक होती है जो व्यक्ति को क्षणिक उत्तेजना प्रदान करती है। संवेग में दैहिक तत्त्व, संज्ञानात्मक तत्त्व तथा व्यवहारपरक तत्त्व सम्मिलित हैं। संवेग में प्राणी का व्यवहार किसी खास लक्ष्य की ओर होता है। वह किसी खास दिशा में ही व्यवहार करता है। प्रस्तुत पत्र में हम संवेग के स्वरूप, वर्गीकरण, विशेषता, संवेगों को प्रभावित करने वाले कारक एवं संवेगात्मक विकास के विषय में चर्चा करेंगे।

मुख्यशब्द– संवेग, व्यवहार, क्रोध, भय, हर्ष, प्रेम, उत्सुकता, तत्त्व, विशेषता,विकास।

प्रस्तावना- संवेगों का मानव जीवन में अत्यधिक महत्त्व है। यह मान्यता है कि संवेग मानव व्यवहार के प्रेरक होते हैं। संवेगों के प्रभाव में आकर व्यक्ति तात्कालिक रूचियों और इच्छाओं पर अधिक ध्यान केन्द्रित करता है और दूरगामी लक्षणों की अवहेलना कर बैठता है। इस प्रकार संवेग कभी तो कार्य करने की प्रेरणा देते हैं और कभी कार्य करने में बाधक बन जाते हैं।

संवेग को अंग्रेजी भाषा में 'इमोशन'(Emotion)कहते हैं। 'इमोशन' शब्द की व्युत्पत्ति लैटिन भाषा के 'इमोवरी'(Emovere) शब्द से हुई है, जिसका अर्थ है- 'उत्तेजित करना'। इस विश्लेषण के अनुसार व्यक्ति की 'उत्तेजित अवस्था' को संवेग कहा जा सकता है।

बेरोन, बर्न तथा कैंटोविज (Baron, Byne&Kantowitz, 1980) के अनुसार- "संवेग से तात्पर्य एक ऐसे आत्मनिष्ठ भाव की अवस्था से होता है जिसमें कुछ शारीरिक उत्तेजना पैदा होती है और फिर जिसमें कुछ खास-खास व्यवहार होते हैं।"

क्रो व क्रो(Crow and Crow, 1973) के अनुसार-"संवेग वह भावात्मक अनुभूति है जो व्यक्ति की मानसिक तथा शारीरिक उत्तेजनापूर्ण अवस्था सामान्यीकृत आतंरिक समायोजन के साथ जुड़ी होती है और जिसकी अभिव्यक्ति व्यक्ति द्वारा प्रदर्शित बाह्य व्यवहार द्वारा होती है।"

इन परिभाषाओं से स्पष्ट है कि संवेग एक जटिल अवस्था है जिसमें कुछ आंगिक प्रक्रियाएँ, अभिव्यंजक व्यवहार तथा कुछ आत्मनिष्ठ भाव सम्मिलित होते हैं। संवेग के अर्थ को समझने के लिए इसके विभिन्न पहलुओं को समझना आवश्यक है। यथा-

i. संवेग एक जटिल अवस्था है। संवेग की अवस्था में बहुत तरह के शारीरिक परिवर्तन, भाव आदि सम्मिलित होते हैं। व्यक्ति की उत्तेजनशीलता का स्तर काफी बढ़ जाता है और शरीर में एक उपद्रव महसूस होता है।
ii. संवेग में कई तरह की आंगिक प्रतिक्रियाएँ होती हैं जैसे रक्तचाप (Blood Pressure) में परिवर्तन, सांस की गति में परिवर्तन, हृदय गति में परिवर्तन आदि।
iii. संवेग में कुछ अभिव्यंजक व्यवहार (Expressive movements) भी होते हैं। संवेग में सिर्फ भीतरी अंगों में ही नहीं बल्कि बाहरी अंगों जैसे हाथ, पैर, आँख, चेहरा आदि में भी कुछ परिवर्तन होते हैं।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

Scanned with OKEN Scanner

ISSN 2454-1249
एकादशोऽङ्कः, XI[th] Issue
जनवरी-जून, 2020
January-June 2020

शिक्षास्मृतिः

अन्ताराष्ट्रिया समकक्षव्यक्ति-समीक्षिता
बहुभाषी-षाण्मासिक-शोधपत्रिका

SHIKSHA-SMRITI

(An International Peer-Reviewed
Multi-Lingual Half-Yearly Research Journal)

प्रधानसम्पादकः
प्रो. के. रविशङ्करमेनोन्

प्रबन्धसम्पादकः
प्रो. राधागोविन्दत्रिपाठी

Scanned with OKEN Scanner

शिक्षास्मृतिः

अन्ताराष्ट्रिया समकक्षव्यक्ति- समीक्षिता बहुभाषी-षाण्मासिक-शोधपत्रिका

SHIKSHA-SMRITI

(An International Peer-Reviewed Multi-Lingual Half-Yearly Research Journal)

प्रधानसम्पादकः

प्रो. के. रविशंकर मेनोन्

पूर्वसंकायाध्यक्षः, राष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठम्, तिरुपतिः,(आ. प्र).

सम्पादकः

डॉ.सोमनाथदाशः

सहायकाचार्यः,अनुसन्धानप्रकाशनविभागः, राष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालय, तिरुपतिः

सहसम्पादकाः

डॉ. सुनीलकुमारशर्मा

डॉ. परमेशकुमारशर्मा

डॉ.दिनेशकुमारयादवः

डॉ. कृष्णकान्त तिवारी

श्रीमती प्रज्ञा

डॉ. नितिनकुमारजैनः

डॉ. आरती शर्मा

डॉ. कालिकाप्रसाद शुक्ल

डॉ. दातारामपाठकः

खुशबू कुमारी

प्रबन्धसम्पादकः

प्रो.राधागोविन्द त्रिपाठी

शिक्षाशास्त्रविभागः, राष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः, तिरुपतिः,(आ.प्र.)

प्रकाशकः

ओम शिक्षासमितिः

मातृ- आशीष, 35, राधाविहारः, श्योपुर- मोड़, प्रतापनगरम्

सांगानेरः , जयपुरम् (राजस्थानम्)–302033

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रमणिका

पत्रम्	लेखकः	पृ.
न्यायनये शब्दार्थसम्बन्धविचारः	डॉ. पीताम्बरमिश्रः	1-3
आधुनिकसंस्कृतवङ्गीयविद्वांसः	डॉ. नृसिंहनाथगुरुः	4-7
श्रीमच्छाङ्करदर्शनं श्रीमद्भागवतमहापुराणञ्च	डॉ. दयानन्दपाणिग्राही	8-11
अग्निपुराणानुसारं पुष्करतीर्थम्	डॉ. पारमितापण्डा	12-15
गङ्गकालीनाभिलेखानां समयस्वरूपविमर्शः	डॉ. विष्णुप्रसाददाशः	16-20
धर्मशास्त्रमते कालविवेचनम्	डॉ. सितांशुभूषणपण्डा	21-31
रससूत्रव्याख्याने अभिनवगुप्तस्य अभिव्यक्तिवादः	डॉ. प्रसन्नकुमारपण्डा	32-34
उत्तरनैषधचरिते रीतिविचारः	डॉ. आरतीशर्मा	35-40
अधिगमसम्पादने स्मृतितत्त्वम्	डॉ. लक्ष्मीधरपण्डा	41-43
मालतीमाधवस्य मनोवैज्ञानिकविश्लेषणम्	डॉ. वसन्तकुमारमिश्रः	44-47
मन्दस्मितरामायणस्य महाकाव्यत्त्वम्	सि. श्रीकान्तः	48-50
भवभूति के पात्रों की अंतः प्रकृति का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण	डॉ. शिप्रा पारीक	51-53
सांख्यदर्शन में प्रकृति-पुरुष सम्बन्ध	डॉ. मार्कण्डेय नाथ तिवारी	54-59
स्फोटविचारः	सुमेधा	60-63
धात्वर्थः	खुशबू कुमारी	64-65
सर्जनात्मकता	डॉ. सोमनाथदाशः	66-72
प्रफुल्लकुमारमिश्ररचिता चित्रकुरङ्गी- एकं विहङ्गावलोकनम्	बलरामसेठी	73-85
सीताहरणनाटके छन्दांसि	डॉ. सुनीलकुमारशर्मा	86-93
संस्कृतसाहित्ये विश्वकुटुम्बकत्वभावना	डॉ. सुशान्तकुमारराजः	94-97
संस्कृत पत्रकारिता एवं बिहार	डॉ. आभा तिवारी	98-103
किशोराणां समायोजन-नैतिकमूल्यशैक्षिकोप-लब्धीनाञ्च विकासे पञ्चतन्त्रकथानां प्रभावस्याध्ययनम्	डॉ. रेखाशर्मा	104-110
प्राचीनग्रन्थानां वर्णाश्रमविषये मूलतत्त्वम्	डॉ. कैलाशचन्द्रमीणा डॉ. जगदीशकुमारजाटः	111-115

Scanned with OKEN Scanner

सीताहरणनाटके छन्दांसि

डॉ.सुनीलकुमारशर्मा
शहायकाचार्यः, शिक्षाशास्त्रविभागः
श्रीलालबहादूरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः
(केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः) नवदेहली

छन्दोवैशिष्ट्यम्

छन्दः काव्यसौन्दर्यबर्द्धकतत्त्वेष्वन्यत् । काव्ये मोहकता-रमणीयता-अभिव्यक्तितीव्रता-आह्लादकता-सम्पादनाय छन्दसः भूमिका गुरुत्वपूर्णा वर्तते । छन्द् धातोः चुरादिगणे घञ् प्रत्यये आह्लादनार्थे, छादनार्थे च "छन्दः" इति शब्दः निष्पद्यते । "छन्दांसि छादनात्" इति निरुक्तवचनानुसारं येन भावरसादय आच्छादिताः भवन्ति तच्छन्दः । अतः छादकत्वं सीमबन्धनं च छन्दसः सामान्यलक्षणम् । चदि आह्लादने दीप्तौ च (भ्वा.धा.७०५.) इति धातोः चन्दयति आह्लादयति इति व्युत्पत्त्या "चदेरादेश्च छः"[१] इति सूत्रेण छकारादेशे "असून्" प्रत्यये कृते "छन्दस्" शब्दः निष्पद्यते । अतः येन सहृदयपाठकानामाह्लादः आनन्दो वा जायते तच्छन्दः । पाणिनीयशिक्षायां "छन्दः पादौ तु वेदस्य"[२] इत्यनेन छन्दः वेदस्य पाद इत्युक्तम् । छन्दः सर्वभयविनाशकारिसाधनं भवति । मृत्युं दूरीकृत्य एतदमरत्वं ददाति । छान्दोग्योपनिषदि देवतानाममरत्वप्राप्तये सुरक्षाकवचरूपेण छन्दः प्रतिपादितमस्ति ।

छन्दोलक्षणम्

कविता प्राणसङ्गीतम् । छन्दः हृत्कम्पनम् । छन्दः लयमर्यादितरूपम् । छन्दः आवेगवाहकम् । छन्दः चित्तानुभवमनायासेन अनेकेषु चित्तेषु सञ्चारयति । छन्दः तादृशः वैखरीध्वनिः, येन प्रत्यक्षीकृत-निरन्तरतरङ्गभङ्गिमया आह्लादेन सह भावस्य अर्थस्य च अभिव्यञ्जना जायते । अस्मिन् मुखध्वनेः, हृदयगतेः श्वासोच्छ्वासस्य, भावावेगस्य च प्रभावो दृश्यते । एतद् ऋतम्बरयुताक्षरबन्धोऽपि उच्यते । "यदक्षरपरिभागं तच्छन्दः" इति सर्वनुक्रमणीकारः कात्यायनोऽभिप्रैति । अमरकोषे "गायत्रीप्रमुखं छन्दः"[३] ; "छन्दः पद्येऽभिलाषे च"[४] इत्युक्तमस्ति । मेदिनीकोषे "छन्दः पद्ये च वेदे च स्वैराचाराभिलाषयोः" इत्यनेन छन्दसः चत्वारोऽर्थाः प्रतिपादिताः सन्ति । अथर्वबृहत्सर्वानुक्रमणिकायाम् अक्षरसंख्यानां नियामकं छन्दः इति प्रतिपादितमस्ति । यथा - "छन्दोऽक्षरसंख्यावच्छेदक-मुच्यते" (पृ.१) । ऋक्सर्वानुक्रमणिकायां "यदक्षरपरिणामं तच्छन्दः" (२-६) इति उक्तमस्ति ।

आंग्लभाषायां छन्दः इत्युक्ते "Prosody", "Metre" इत्युच्यते । "Prosody" नाम गानयोग्याक्षरबन्धः । एतत् लैटिन् भाषायम् "एम्ह्दह्र इति कथ्यते । "एम्ह्दह्र नाम मूलविभागेषु विभाजनम् ।

छन्दोभेदाः

सामान्यतया छन्दः द्विविधः वैदिकच्छन्दः, लौकिकच्छन्दश्च । तत्र वेदेषु यानि छन्दांसि प्रयुक्तानि सन्ति तानि वैदिकच्छन्दांसि इत्युच्यन्ते । तेषु — गायत्री, त्रिष्टुप्, अनुष्टुप्, बृहती, पंक्तिः, ऊष्णिक्, जगती इत्यादीनि प्रसिद्धानि सन्ति । लौकिकच्छन्दः द्विविधो भवति । वृत्तिच्छन्दः मात्राच्छन्दश्च । उक्तं च छन्दःप्रकाशे -

मात्रावर्णविभेदेन छन्दो द्विविधमुच्यते ।
विधां तृतीयमप्याहुरक्षरच्छन्दसा परे ।।[५]

तथैव वृत्तरत्नाकरे केदारभट्टः छन्दसः द्वैविध्यं प्रतिपादयति । यथा -

पिङ्गलादिभिराचार्यैः यदुक्तं लौकिकं द्विधा ।
मात्रावर्णविभेदेन छन्दस्तदिह कथ्यते ।।[६]

Scanned with OKEN Scanner

ISSN 2454-1230

एकादशोऽङ्कः, XIth Issue

जनवरी-जून, 2020

January-June 2020

शिक्षाप्रियदर्शिनी

अन्ताराष्ट्रिया समकक्षव्यक्ति-समीक्षिता

बहुभाषी-षाण्मासिक-शोधपत्रिका

SHIKSHA PRIYADARSHINI

(An International Peer-Reviewed Multi-Lingual)
Half-Yearly Research Journal)

प्रधानसम्पादकः

प्रो. चांदकिरणसलुजा

प्रबन्धसम्पादकः

प्रो. पवनकुमारः

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रमणिका

क्र.	लेखक	पत्रम्	पृ.
1.	Prof. R. Deepta	From Conventional to Radical – the Roles of Some Women Characters in the Mahābhārata	1
2.	डॉ. कैलाशचन्दमीणा डॉ. जगदीशकुमारजाट:	पुराणेषु शिक्षा भक्तिमार्गस्य वैशिष्ट्याधानाय आख्यायिकाया: स्थानं कथं वर्तते?	8
3.	डा. देशबन्धु: जगदीशकुमार:	वास्तुशास्त्रपरम्परायां प्राचीनाऽर्वाचीनमतानुसारं मृत्तिकापरीक्षणम्	16
4.	डा.वीरेंद्र सिंह बर्त्वाल	प्रेमचंद की कहानी 'सद्गति' में सामाजिक यथार्थ	25
5.	डा. आरती शर्मा	संज्ञानात्मकमनोविज्ञानस्य विधय:	29
6.	डा. सुरेश शर्मा	विवाह मेलापक में नाडी दोष विचार	33
7.	डा. सुनील कुमार शर्मा	हिन्दी शिक्षण में अनुवाद का स्वरूप एवं महत्त्व	37
8.	डॉ. सुषमा चौधरी	संस्कृत एवं अवधी का अंत: संबंध- रामचरितमानस के परिप्रेक्ष्य में	40
9.	डा. अजय कुमार	कोरोना काल में बदलते जीवन मूल्य और भारत की भूमिका	44
10.	डा. नितिनकुमारजैन: रेनू	परास्मृति:, तत्सम्बद्धानां शोधकार्याणां पराविश्लेषणञ्च	51
11.	डा. भारती कौशल	शिक्षकों में व्यावसायिक विकास के लिए सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी की भूमिका	56
12.	डॉ अखिलेश कुमार त्रिपाठी	श्रीमद्भागवद्गीता में निहित ज्ञान योग का शैक्षिक विश्लेषण	63
13.	स्वाती लोडे	पाणिनीयव्याकरणे नियमसूत्रविमर्शणम्	67
14.	खुशबू कुमारी	स्फोटतत्त्वविमर्श:	71
15.	गुंजन पाठक	भारतीयपरिप्रेक्ष्य में प्रतिभा एवं क्षमता	74
16.	वेणुधरदाश:	वैदिकवाङ्मये कृषिविज्ञानम्	78
17.	अभय तिवारी	भारतीय परिप्रेक्ष्य में आध्यात्मिकबुद्धि तथा शिक्षा	83
18.	अभिनवशर्मा	लकारार्थविमर्श:	86
19.	सुशील कुमार	सेवापूर्व अध्यापक की जीवन शैली एवं शैक्षिक	89

Scanned with OKEN Scanner

7.

हिन्दी शिक्षण में अनुवाद का स्वरूप एवं महत्त्व

डॉ. सुनील कुमार शर्मा
सहायकाचार्य, शिक्षाशास्त्रविभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री,
राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।

एक भाषा में कही हुई बात को जब हम किसी दूसरी भाषा में इस प्रकार रूपान्तरित करते हैं कि उसके अर्थ और अभिप्रेत की व्यंजना यथावत् और प्रभावशाली ढंग से कर सके, तो उसे अनुवाद कहा जाता है। अथवा यों भी कहा जा सकता है कि किसी एक भाषा की ज्ञान विज्ञान सम्बन्धी पाठ्य-सामग्री का दूसरी भाषा में रूपान्तरण या पुनः कथन 'अनुवाद' है।

अनुवाद की व्युत्पत्ति एवं स्वरूप-

'अनुवाद' संस्कृत का तत्सम शब्द है। 'अनुवाद' का सम्बन्ध संस्कृत की 'वद्' धातु से है। इसका अर्थ है- 'बोलना' अथवा 'कहना'। 'वद्' धातु में 'घञ्' चवर्ग का 'ञ्' प्रत्यय जोडने से यह भाववाचक संज्ञा में परिवर्तित हो जाता है। इसके बाद जो शब्द बना, उसका अर्थ हुआ 'कहने की क्रिया' या 'कही हुई बात'। यदि 'वद्' धातु में 'अ' उपसर्ग भी जोड़ दें तो शब्द बनेगा- 'अनुवाद'। सामान्यतः 'अनु' उपसर्ग का अर्थ 'पीछे' या 'बाद' में होता है। इस प्रकार 'अनुवाद' शब्द का अभिप्राय हुआ- 'किसी कही हुई बात के बाद कहना' या 'पुनः कथन', किसी के कहने के बाद कहना आदि।

'शब्दार्थ चिन्तामणि' कोष में अनुवाद का अर्थ है- 'प्राप्तस्य पुनः कथनम्' या 'ज्ञातार्थस्य प्रतिपादनम्'।इनका अर्थ इस प्रकार है- प्राप्त या ज्ञान बात को एक बार फिर कहना अथवा प्रतिपादन करना।

वस्तुतः 'अनुवाद' से मिलता-जुलता एक अन्य शब्द- 'अनुवाक्' भी संस्कृत में उपलब्ध है। यह शब्द वैदिक साहित्य में प्रयुक्त होता था, परन्तु कालांतर में 'अनुवाद' का प्रयोग वेद के किसी अनुभाग के रूप में होने लगा। प्राचीन भारत मे शिक्षा-दीक्षा की मौखिक परम्परा प्रचलित थी। गुरुजी जो कहते थे, शिष्य उसे दोहराते थे। इस दुहराने को ही 'अनुवाद' और 'अनुवादक' शब्द से जाना जाता है। उपनिषदों में भी अनुवाद शब्द दुहराने के अर्थ में ही प्रयोग होता है। भारतीय दर्शन ग्रन्थों में भी 'अनुवाद' शब्द का पर्याप्त प्रयोग मिलता है। न्याय और मीमांसा दर्शन में- पहले से कही गयी किसी बात के समर्थन में कहे गये दूसरे वचन को अथवा एक ही बात की अधिक व स्पष्ट रूप में पुनः व्याख्या को अनुवाद कहा जाता है।

आजकल 'अनुवाद' शब्द अंग्रेजी के 'Translation' का हिन्दी पर्याय के रूप में प्रचलित है। इसका अर्थ है- एक भाषा से दूसरी भाषा में भाव-विचार को ले जाना। ध्यान रहे कि इसके समान लगने वाला दूसरा शब्द भी अंग्रेजी में उपलब्ध है- 'Transcription' इसे हिन्दी में 'लिप्यन्तरण' कहते हैं। दोनों शब्द सतही तौर पर समानार्थक होने का भ्रम पैदा कर सकते हैं, किन्तु दोनों में गम्भीर भिन्नता है। एक उदाहरण से यह बात स्पष्ट हो जायेगी- 'राम ने रावण को मारा' वाक्य को उपर्युक्त दोनों प्रकार भाषांतरित करने पर दो रूप इस प्रकार मिलेंगे-

1. Ram killed Ravana- (Translation)
2. Ram ne Ravana ko Mara- (Transcription)

स्पष्ट है कि प्रथम वाक्य के द्वारा अनुवाद किया गया है और दूसरे वाक्य में मूल वाक्य को मात्र लिपिबद्ध बदलकर रोमन लिपि में रख दिया गया है। कहना न होगा कि 'अनुवाद' के सन्दर्भ में भाषान्तर की बात करते समय हमारा अभिप्राय मूल भावविचार को दूसरी (लक्ष्य) भाषा में उसके स्वभाव और प्रकृति के अनुसार अन्तरित करना है न कि मात्र लिप्यंतरण।

परिभाषा की दृष्टि से आधुनिक लेखकों व विचारकों ने 'अनुवाद' की विभिन्न परिभाषाएँ दी हैं। भारतीय एवं पाश्चात्य विचारकों की कुछ प्रमुख परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं-

Scanned with OKEN Scanner

ISSN - 2277-6443

संयुक्ताङ्कोऽष्टमाङ्कः 2019-20
2020-21

(42)

2277-6443

॥ विद्यारश्मिः ॥

मीक्षिता मूल्याङ्किता च वार्षिकी राष्ट्रियशोधपत्त्रिका

eer Reviewed Refereed Annual National Research Journal

वेदर्चामर्चयन्तस्स्मृतिचयवचनं तत्त्वतश्चर्चयन्तः
शास्त्रान्तःसंस्पृशन्तोऽमृतगतिमतिदं दर्शनं दर्शयन्तः।
साहित्यं स्वादयन्तस्सहृदयवसतौ भासमुद्भासयन्तो
विद्याया रश्मयो ज्ञान् पिपुरतु सुधियां शेमुषीमेधयन्तः॥

संरक्षकः
प्रो.के.बी.सुब्बरायुडुः,कुलपतिः

प्रधानसम्पादकः
प्रो. भारतभूषणमिश्रः

सम्पादकः,संयोजकश्च
प्रो.बोधकुमारझाः

केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः
(संसदोऽधिनियमेन स्थापितः)
(शिक्षामन्त्रालयभारतसर्वकाराधीनः)

Scanned with OKEN Scanner

...सूत्रव्याख्याने पण्डितराजस्य योगदानम्	प्रो. राजन्. ई. एम्.	1
...विरण संरक्षण में ज्योतिष शास्त्र की उपादेयता	प्रो. भारतभूषणमिश्रः	4
...ल का संस्कृत साहित्य	प्रो. रमाकान्तपाण्डेयः	15
...तवाङ्मये विज्ञानस्य मौलिकतत्त्वानां ...णितनिरीक्षणपरीक्षणादीनां समृद्धपरम्परा	प्रो. देवदत्तसरोदे	26
...दान्तदृष्ट्या लक्षणाविचारः	डा. जि.नरसिंहुलुः	47
...ङ्कणकृतमृगाङ्कशतकस्थालङ्कारसमीक्षणम्	डा. नारायणन्. ई. आर्.	53
...पशास्त्रे दार्शनिकतत्त्वानां विमर्शः	डा. प्रसादगोखले	62
...रणस्य प्रयोगभूरस्ति साहित्यम्	श्री. पङ्कजः	66
...रिता एवं विज्ञापन	डा. सुनीलकुमारशर्मा	71
...पक शिक्षा की धारणा में परिवर्तन	डा. आरती शर्मा	77
...भट्टसम्मतानौचित्यस्य शब्दशास्त्रीयं बीजम्	डा. दयारामदासः	82
...णेषु विष्णुस्वरूपविमर्शः	डा. दे. दयानाथः	88
... वर्तमानपरिस्थितिविमर्शः	डा. एस् कृष्णा	95
...विकासे शिक्षायाः भूमिका	डा. दशरथभरासागरः	100
...धिकार' की कविताओं का नारीसन्दर्भ में समीक्षण	डा. गीतादेवी दूबे	103
...शिक्षाशास्त्रिणां विध्यनुगुणं संस्कृतशिक्षणे नवोन्मेषः	डा. विनोदकुमारशर्म्मा	109
... पाटील यांच्या समग्र कवितेतील स्त्री जाणिवा	डा. मिनाक्षी ब-हाटे	117
...parative study of mental health ...n tribal and urban senior college ... student of Mumbai University	Dr. Shankar Baburao Andhale	122
...ध्यापनानुक्षेत्रसङ्गतौ कण्टकार्जुनदिशा ...यविमर्शः	श्रीमती नम्रतापटेलः	128
...दे कृषिरोषधिश्चेत्यनयोरध्ययनम्	श्री. पद्मराजरेग्मी	136

Scanned with OKEN Scanner

पत्रकारिता एवं विज्ञापन

✍ डॉ. सुनील कुमार शर्मा

(पत्रकारिता के गहनतत्वसमीक्षण की दृष्टि से सम्पन्न विद्वान के द्वारा प्रस्तुत शोधपत्र में पत्रकारिता की समग्र प्राचीन यात्रा के साथ-साथ वर्तमान स्थिति एवं स्वरूप को नितान्त ही सूक्ष्मातिसूक्ष्म दृष्टि से प्रस्तुत किया गया है, जो कि निश्चित ही अध्येताओं के लिए उनकी ज्ञानपिपासा शान्त करने में सक्षम होगा ।)

शोधसार (Abstract) - शुभदृष्टि, समदृष्टि एवं सत्यं, शिवं सुन्दरम् जैसी विशेषताओं के कारण पत्रकारिता पाठकों में दूर-दृष्टि प्रदान करती है । पत्रकारिता अभिव्यक्ति की एक मनोरम कला है । इसका कार्य जनता तथा जन-नेताओं के समक्ष लोक कल्याण संबंध कार्यों की सूची प्रस्तुत करना है । भारत में पत्रकारिता को पहले मिशन के रूप में अपनाया गया किन्तु आज पत्रकारिता व्यावसायिक ज्ञान का व्यवसाय है, इसमें तथ्यों की प्राप्ति, मूल्यांकन एवं ठीक-ठीक प्रस्तुतीकरण होता है । ज्ञान और विचारों को, समीक्षात्मक टिप्पणियों के साथ शब्द, ध्वनि तथा चित्रों के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाना ही पत्रकारिता है । यह वह विधा है जिसमे सभी प्रकार के कार्यों, कर्तव्यों और लक्ष्यों का विवेचन होता है । प्रिंट, रेडियो, टेलीविजन या इन्टरनेट के जरीये खबरों के आदान-प्रदान को भी पत्रकारिता कहा जाता है । इसी प्रकारविज्ञापन का काम संदेश प्रसारित करना है । विज्ञापन उपभोक्ताओं के ज्ञान को व्यापक बनाता है । विज्ञापन की सहायता से उपभोक्ता अल्प समय में ही आवश्यक उत्पादों को ढूंढते और खरीदते हैं । इस प्रकार प्रस्तुत पत्र में पत्रकारिता और विज्ञापन के बारे में विस्तृत चर्चा करेंगें ।

'Journalism can never be silent: that is its greatest virtue and its greatest fault - It must speak, and immediately, While the echoes of wonder, the claims of triumph and the horror are still in the air.' (Henry Grunwald)

प्रस्तावना- पत्रकारिता क्या है या समाचार क्या है इस बारे में अलग-अलग पत्रकारों की अलग-अलग धारणा हो सकती है लेकिन इस का लक्ष्य है - 'जनता को नयी और सही जानकारी देना ।' क्योंकि जानकारी देना और जानकारी पाना मनुष्य के स्वभाव में होता है । सार-संक्षेप में यह कि पर्याप्त संख्या में मनुष्य जिसे जानना चाहे वह समाचार है, शर्त यह है कि वह सुरुचि तथा प्रतिष्ठा के नियमों का उल्लंघन न करे, यों पत्रकारिता की अनेक परिभाषायें हो सकती हैं, जैसे -

Scanned with OKEN Scanner

37

ISSN 2454-1230

पञ्चदशोऽङ्कः, XVth Issue
जनवरी-जून, 2022
January-June 2022

शिक्षाप्रियदर्शिनी

अन्ताराष्ट्रिया समकक्षव्यक्ति-समीक्षिता
बहुभाषी-षाण्मासिक-शोधपत्रिका

SHIKSHA PRIYADARSHINI

(An International Peer-Reviewed Multi-Lingual)
Half-Yearly Research Journal)

मुख्यसंरक्षकः
प्रो. श्रीनिवास वरखेडी

प्रधानसम्पादकः
प्रो. पवनकुमारः

प्रबन्धसम्पादकौ
प्रो. राधागोविन्द त्रिपाठी
प्रो. अंजूसेठः

Scanned with OKEN Scanner

पञ्चदशोऽङ्कः जनवरी- जून, 2022 ISSN No: 2454-1230

शिक्षाप्रियदर्शिनी

अन्ताराष्ट्रिया समकक्षव्यक्ति-समीक्षिता बहुभाषी-षाण्मासिक-शोधपत्रिका

SHIKSHA- PRIYADARSHINI

(An International Peer-Reviewed Multi-Lingual Half-Yearly Research Journal)

मुख्यसंरक्षकः

प्रो. श्रीनिवास वरखेडी

कुलपतिः, केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, नवदेहली

प्रधानसम्पादकः

प्रो. पवनकुमारः

परीक्षानियन्त्रकः, केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, नवदेहली

सम्पादकाः

डॉ. सुनीलकुमारशर्मा

सहायकाचार्यः, शिक्षासंकायः, श्री लालबहादुरशास्त्रिराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः, नवदेहली

डॉ. नितिनकुमारजैनः

सहायकाचार्यः, शिक्षासंकायः, केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, नवदेहली

डॉ. आरती शर्मा

सहायकाचार्यः, शिक्षासंकायः, श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः, नवदेहली

प्रबन्धसम्पादकौ

प्रो. राधागोविन्दत्रिपाठी

आचार्यः, शिक्षाविभागः, राष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः, तिरुपतिः

प्रो. अञ्जूसेठः

सत्यवतीमहाविद्यालयः (दिनम्) दिल्लीविश्वविद्यालयस्य अधीनस्थः, नवदेहली

प्रकाशकः

संस्कृतसंस्कृतिविकाससंस्थानम्

बाडी, धौलपुरम्, राजस्थानम् – 328021

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रमणिका

	सम्पादकीय	viii
	प्रबन्ध सम्पादकीय	x
	शैक्षणिक सुधारों का विशिष्ट प्रकल्प : शिक्षाप्रियदर्शिनी (शिक्षाप्रियदर्शिनी के गत अंक -14 की समीक्षा)	xi
1.	राजनीति के प्रति धर्मः एक विधायक एवं निर्णायक आधार प्रो. पवन कुमार एवं डॉ. नितिन कुमार जैन	1
2.	अलङ्कारशास्त्रविचारः डॉ. राघवकुमारझा	8
3.	मण्डूकसूक्ते राष्ट्रियभावना डा. शम्भुकुमारझा	14
4.	**The concept of Jivanmukti in Upanishads** Dr. Nilachal Mishra	19
5.	न्याय-वैशेषिकदर्शनयोरभावनिरूपणम् ज्योति कुमारी	24
6.	भारतीयनास्तिकदर्शनेषु चार्वाकदर्शनस्य तत्त्वविमर्शः शुभम मुखोपाध्यायः	33
7.	उपपदविभक्त्यर्थविमर्शः अभिजितघोषः	43
8.	सरस्वतीकण्ठाभरणग्रन्थाधारेण सन्प्रत्ययविमर्शः संग्रामसर्दारः	53
9.	श्रीमद्भगवद्गीता के प्रथम अध्याय में निगमित प्रबंधकों के लिए वर्णित प्रबंधन प्रणाली: एक विश्लेषण ज्योतिर्मयी प्रियदर्शिनी पण्डा	60
10.	शिक्षा क्षेत्र में अध्यापकों के समायोजन की महत्त्वपूर्ण भूमिका उदयकान्त शुक्ल	68
11.	वैदिककालीन समाज- एक अवलोकन डॉ. गीता दुबे	73
12.	ऋग्वेद में भौतिकविज्ञान सत्यम शुक्ल	78

Scanned with OKEN Scanner

viii
x
xi
1
8
14
19
24
33
43
53
60
68
73
78

13.	काव्यालङ्कारकारिकायां काव्यलक्षणविचारः अम्लानः आचार्यः	83
14.	जातिगत भिन्नता का पारिवारिक वातावरण पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन डॉ. दीपशिखा मित्तल	88
15.	संस्कृतिः संस्कृताश्रिता वेणुधरदाशः	92
16.	वैदिक शिक्षा प्रणाली की नई शिक्षा नीति में उपादेयता डॉ. मृत्युञ्जय कुमार तिवारी	100
17.	श्रीमद्भगवद्गीता का प्रतिपाद्य-एकमेव शरणागति राघवेन्द्र भारद्वाज एवं डॉ. तुलसी देवी	105
18.	विद्यालयों में शारीरिक शिक्षा कार्यक्रम डॉ. खुशबू कुमारी	110
19.	मानसिक स्वास्थ्य की स्थिति एवं सुधारः भारतीय परिप्रेक्ष्य डॉ. पिंकी मलिक	114
20.	प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाण...इत्यादिसूत्रे परिमाणग्रहणविचारः डॉ. एल्. सविता आर्या	121
21.	वेदान्त दर्शन में मानव चेतना डॉ. रमेश कुमार	130
22.	'मनोरश्वासि' (राजा मनु की घोडी है) पूज्य स्वामी विवेकानन्द सरस्वती जी महाराज	136
23.	**Treatment of Guṇas in the Sāṁkhya System** Swati Sucharita Pattanaik	139
24.	मानस के अनुसार ज्ञान के अधिकारी डॉ. जयशंकर शुक्ल	146
25.	समकालीन हिंदी साहित्य में बाल स्वर प्रज्ञा शुक्ला	153
26.	राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के परिप्रेक्ष्य में शिक्षक शिक्षा की चुनौतियाँ एवं सुझाव डॉ. मारकण्डेय दीक्षित	160
27.	संस्कृतसम्भाषणे परस्मैपदप्रयोगाणां प्रासङ्गिकता सुकान्त प्रामाणिक	166
28.	वैदिकसंस्कृतेः आधुनिकपरिप्रेक्ष्ये प्रासंगिकता डॉ. सुनील कुमार शर्मा	172

शिक्षाप्रियदर्शिनी
(अन्ताराष्ट्रिया साप्ताहिक समीक्षिता
बहुभाषीयशोधपत्रिका)
पञ्चदशोऽङ्क, जनवरी-जून 2022
ISSN 2454-1230

28.

वैदिकसंस्कृतेः आधुनिकपरिप्रेक्ष्ये प्रासंगिकता

डॉ. सुनील कुमार शर्मा
सहायक आचार्य, शिक्षा संकाय
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, (केन्द्रीय विश्वविद्यालय) नई दिल्ली

भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे संस्कृतं संस्कृतिस्तथा कथनस्याभिप्रायः भवति यत् भारतीयसमाजस्य संस्कृतेराधारः संस्कृतभाषा। इयं भाषा विश्वस्य श्रेष्ठतमा प्राचीनभाषा इति। अस्याः भाषायाः सुविस्तृतं वैदिकं लौकिकञ्च साहित्यं विलोक्य विश्वस्य सर्वे मानवाः आश्चर्यचकिताः भवन्ति। अनया भाषया लिखिताः चत्वारो वेदाः, वेदाङ्गानि, रामायणं, महाभारतं तथा च विविधैः स्वनामधन्यैः महाकविभिः विरचितानि महनीयानि, नाटक-महाकाव्य-चम्पूकाव्य-गीतिकाव्यादीनि पठित्वा कस्य मनः हर्षोल्लासं न प्राप्यते? अस्यां भाषायां अस्माकं संस्कृतेः पोषणाय येषां विचाराणां चिन्तनानां वा समावेशोऽस्ति न तादृशः अन्यत्र दृश्यते।

भारतीयसंस्कृतिः कर्मप्रधाना वर्तते। **"कर्तुरीप्सिततमं कर्म"** इति सूत्रं पाणिनीयव्याकरणस्य कारकप्रकरणे, समायाति कर्मसंज्ञां च करोति इति तु व्याकरणेऽपि कर्ममहिमा सुदृढः वर्तते। योऽत्र यादृशं कर्मकरोति तादृशं फलं लभते इति तु जगति स्पष्टं दृश्यते । गोधूमवपने सति गोधूमः एव प्राप्यते, अन्यस्यान्नस्य प्राप्तिः कदापि न जायते-इति तु प्रत्यक्षं प्रमाणम्। कर्मानुसारं फलम् इति सैद्धान्तिकः नियमः । अजो नित्यो यो आत्मापि मानवशरीरं या जीवशरीरं या अन्यत् कर्मानुसारं प्राप्नोति। यदा कर्माशयो विपाकारम्भी भवति तदा जन्म, आयुः, भोगश्च लभ्यते। पतञ्जलिमहर्षिणा योगशास्त्रे लिखितम् **"सति मूले तद्विपाको जात्यायुर्भोगाः"**[1] क्लेशशब्दाः कर्माशयाः एव फलप्रदाः भवन्ति, दग्धबीजाः कर्माशयाः न। कर्मानुसारं जन्म भवति, आयुः अर्थात् जीवनं मिलति, भोगश्च प्राप्यते-एतानि सर्वाणि कर्मानुसारमेव । बहुधा कर्माणि बहूनि जन्मानि ददाति । विषयेऽस्मिन् "भूमा" कश्चित् पक्षपातः न करोति, तत्र करूणाभावः न तिष्ठति, ईश्वरः सकरुणः दृश्यते न्यायदाने। गीतायां कृष्णस्य निर्देशः "चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः।"[2] कर्मप्रकारः द्विधाभवति सकामः निष्कामश्च। सकामः विभागः-सत्कर्म (पुण्यकर्म) मिश्रित कर्म (पुण्यापुण्यकर्म) असत्कर्म (अशुद्धकर्म) च। एतानि सर्वाणि कर्माणि क्रियमाणानि, एतेषां नियन्त्रणं निष्कामकर्मद्वारा भवितुमर्हति। अतः ऋग्वेदे कथितमस्ति -

संगच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते ॥[3]
समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभि मन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि ॥

[1] योगशास्त्र 2 / 13
[2] श्रीमद्भगवद्गीता 4 / 13
[3] ऋग्वेद १०.१९१२

Scanned with OKEN Scanner

ISSN 2454-1230

चतुर्दशोऽङ्कः, XIV[th] Issue

जुलाई-दिसम्बर, 2021

July-December 2021

शिक्षाप्रियदर्शिनी

अन्ताराष्ट्रिया समकक्षव्यक्ति-समीक्षिता

बहुभाषी-षाण्मासिक-शोधपत्रिका

SHIKSHA PRIYADARSHINI

(An International Peer-Reviewed Multi-Lingual)
Half-Yearly Research Journal)

मुख्यसंरक्षकः

प्रो. श्रीनिवासः वरखेडी

प्रधानसम्पादकः

प्रो. चांदकिरणसलूजा

प्रबन्धसम्पादकः

प्रो. पवनकुमारः

Scanned with OKEN Scanner

शिक्षाप्रियदर्शिनी (अङ्कः 14)
अनुक्रमणिका

	प्रधान सम्पादकीय	viii
	प्रबन्ध सम्पादकीय	ix
1.	राष्ट्रियशिक्षानीतिः 2020 प्रो. चान्दकिरण सलूजा	1
2.	'राष्ट्रियशिक्षानीतिः 2020' सन्दर्भे संस्कृतविश्वविद्यालयेषु बहुविषयकतायाः क्रियान्वयनोपायाः प्रो. सन्तोषमित्तलः	6
3.	National Education Policy 2020: Inclusive Classroom Environment and Constructivist Learning Approach Prof. Rachna Verma Mohan	12
4.	राष्ट्रीय शिक्षानीति 2020 के सन्दर्भ में अध्यापक शिक्षा डा. प्रकाश चन्द्र पन्त 'दीप'	21
5.	नई शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में भारतीय शिक्षा एवं डॉ. एस. राधाकृष्णन डा. सुरेंद्र महतो	32
6.	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षक की संकल्पना डा. दयानिधि शर्मा	36
7.	शैक्षिक तकनीकी के प्रोन्नयन के लिए राष्ट्रीय शिक्षा निति-2020, के दिशानिर्देश डा. सुनील कुमार शर्मा	43
8.	NEP 2020 : Core Spirit and its Objectives Dr. Jitender Kumar	55
9.	राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 की दार्शनिक पृष्ठभूमि डा. नितिन कुमार जैन	67
10.	नवराष्ट्रियशिक्षानीतेः परिप्रेक्ष्ये संस्कृतशिक्षा डा. मनीषजुगरानः	74
11.	राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 के परिप्रेक्ष्य में पाठ्यचर्यागत परिवर्तन डा. अजय कुमार	81

Scanned with OKEN Scanner

शिक्षाप्रियदर्शिनी
(अन्ताराष्ट्रिया समकक्षव्यक्ति-समीक्षिता बहुभाषीयशोधपत्रिका)
चतुर्दशोऽङ्कः, जुलाई-दिसम्बर, 2021
ISSN : 2454-1230

7.

शैक्षिक तकनीकी के प्रोन्नयन के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020, के दिशानिर्देश

डॉ. सुनील कुमार शर्मा
सहायकाचार्य, शिक्षापीठ
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।

शोध सारांश

"शिक्षा करेगी नव युग का निर्माण,
आने वाला समय देगा इसका प्रमाण।"

34 वर्षों के अंतराल के बाद शिक्षा नीति में बदलाव लाया गया है और बदलाव लाना जरूरी भी था । समय की जरूरत के अनुसार यह पहले ही हो जाना चाहिए था। लेकिन कोई नहीं पहले ना सही अब नई नीति को मंजूरी मिल चुकी है। उचित बुनियादी शिक्षा प्राप्त करना भारतीय संविधान के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति का जन्मसिद्ध अधिकार है। सुखी जीवन जीने के लिए, तैयार होने के लिए एक बच्चे के विकास में शिक्षा बेहद महत्वपूर्ण तत्व है। भारत सरकार द्वारा 2030 तक नीतिगत पहलुओं को प्राप्त करने के उद्देश्य से नई शिक्षा नीति तैयार की गई है। यह विद्यार्थी की आत्म-क्षमताओं और अवधारणा पर आधारित सीखने की प्रक्रिया है न कि रटने वाली प्रक्रिया। और इस सीखने के क्रम को और अधिक पुष्ट करें के लिए शिक्षा तकनीकी की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण है । शैक्षिक तकनीकी किसी भी सीखने की व्यवस्था का एक कारगर अंग है जो शिक्षा के निर्धारित लक्ष्यों को पाने में विभिन्न तरीकों, विधियों और उत्पादों के द्वारा मदद करता है। इसके अंतर्गत शिक्षा के लक्ष्यों का व्यवस्थित ढंग से निर्धारण, विद्यार्थियों की विभिन्न आवश्यकताओं की पहचान, संदर्भ जिसमें बच्चे सीखते हैं, और साथ ही इनमें से प्रत्येक के लिए आवश्यक प्रावधानों की सूची तैयार करना शामिल है। हमारे सामने चुनौती है उपयुक्त व्यवस्थाओं को तैयार करना जो कि समुचित शिक्षण-अधिगम व्यवस्थाओं को सुदृढ़ करें ताकि निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके।

प्रस्तुत लेख में; *राष्ट्रीय शिक्षा निति में निर्दिष्ट उन निर्देशों को दृष्टिगत रखते हुए मूल्याङ्कन करने का प्रयास किया गया है जिनके द्वारा डिजिटल इंडिया अभियान सप्पूर्ण देश को एक डिजिटल रूप से सशक्त समाज एवं ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था में परिवर्तित करने में मदद कर रहा है । इस रूपांतरण में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ प्रौद्योगिकी भी शैक्षिक प्रक्रिया एवं परिणामों के सुधार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। शिक्षा तकनीकी को वर्तमान और भविष्य के अनुरूप उसकी आवश्यकता और महत्व को ध्यान रखते हुए और अधिक समृद्ध करने का प्रयास किया जा सके ताकि शिक्षा जगत भारतीय और वैश्विक स्तर की मांग के अनुसार स्वयं को अद्यतन करते हुए विश्व पटल पर छाप छोड़ सके ।*

Scanned with OKEN Scanner

ONLINE ISSN: 2582-0095

Impact Factor : 5.016

Gyanshauryam
International Scientific Refereed Research Journal

website : www.gisrrj.com

Certificate of Publication

Ref : GISRRJ/Certificate/Volume 4/Issue 5/697

15-Sep-2021

This is to certify that the research paper entitled

संस्कृत भाषा में स्मरण का महत्त्व

डॉ. सुनील कुमार शर्मा

सहायकाचार्य (शिक्षापीठ), श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय (केन्द्रीय विश्वविद्यालय), नई दिल्ली।

After review is found suitable and has been published in the Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal(GISRRJ), Volume 4, Issue 5, September-October 2021. [Page No : 143-147]

This Paper can be downloaded from the following GISRRJ website link

https://gisrrj.com/GISRRJ214571

GISRRJ Team wishes all the best for bright future

Peer Reviewed and Refereed International Journal

Editor in Chief
Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal

Associate Editor
GISRRJ

Scanned with OKEN Scanner

संस्कृत भाषा में स्मरण का महत्त्व

डॉ. सुनील कुमार शर्मा
सहायकाचार्य (शिक्षापीठ)
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय (केन्द्रीय विश्वविद्यालय), नई दिल्ली।

Article Info
Volume 4 Issue 5
Page Number : 143-147

Publication Issue :
September-October-2021

Article History
Accepted : 01 Sep 2021
Published : 15 Sep 2021

शोध सार (Abstract)-"संस्कृतं नाम दैवी वाक् अन्वाख्याता महर्षिभिः" यह उक्ति हमें निश्चितरूप से संस्कृत के गौरवशाली स्थान को स्मरण कराती है। यही नहीं हमें उन ऋषियों महर्षियों एवं महान् विद्वान विभूतियों की भी याद दिलाती है, जिन्होंने इसे संरक्षित किया एवं परिवर्धित किया है। वस्तुतः संस्कृत शिक्षा वैदिक काल से चलती आ रही है। यह शिक्षा पहले से ही आश्रम पद्धति में अथवा गुरुकुलीय प्रणाली का एक अंग थी। संस्कृत भाषा तो उद्गम स्थल का स्त्रोत बना हुआ पानी शिलाओं का विदीर्ण करते हुए महानदी का आकार ले लेता है। अतः कहा जा सकता है कि तुलनात्मक नजरिये से संस्कृत भी कभी सीमित दायरे में नही थी, क्योंकि संस्कृत भाषा का मनुष्य के जीवन से लेकर मृत्यु पर्यन्त तक की सभी क्रियाओं से सम्बन्ध होता है। यह उपासना स्थलों पर हमेशा गूँजती रहती है। वस्तुतः संस्कृत शिक्षा की वर्तमान परिस्थिति को यदि आंका जाय तो आज भी आंग्ल भाषायी बाहुल्य देश में यह हमारे सामने असहाय प्रतीत होती है।क्योंकि आजकल के विद्यार्थी विषय के स्मरण में विश्वास नहीं रखते, उनका मानना है कि विषयवस्तु को समझना जरूरी है, कण्ठस्थ करना नहीं। लेकिन संस्कृत भाषा के अध्ययन में विषय अवगाहन के साथ मुख्य तथ्यों को प्रमाणित करने के लिए स्मरण रखना भी अत्यावश्यक है। अतः संस्कृत भाषा शिक्षण में 'स्मरण' को पूर्णतः निष्कासित नहीं किया जा सकता। इस शोधपत्र में हम संस्कृत भाषा की विभिन्न विधाओं में स्मरण के महत्त्व को जानेंगे।

मुख्य शब्दः- संस्कृत, भाषा, स्मरण, अध्ययन, शिक्षण, विधा।

भूमिका- वाण्येका समलङ्करोति पुरुषं या संस्कृताधार्यते।

वर्तमान में संस्कृत शिक्षा की स्थिति बहुत ही चिन्तनीय तथा दयनीय बनी हुई है। संस्कृत का नाम सुनते ही लोग मुँह फेर लेते हैं। शायद उन्हें यह जानकारी नहीं है कि जिस भाषा ने हमें संसार में स्थान दिया है, वह संस्कृत भाषा ही है। जिस प्रकार समाज में आज कई लोग अपने बुजुर्ग माता-पिता को अपने से अलग कर वृद्धाश्रम में भेज देते हैं, ठीक उसी प्रकार अन्य भाषाएँ भी अपनी जननी संस्कृत को छोड़ रहे हैं। जिस संस्कृत ने भारत को विश्वगुरु होने का सम्मान दिया, अवसर दिया, वही आज अपने अस्तित्व को खोज रही है। कारण कोई समझना नहीं चाहता, स्मरण नहीं करना चाहता, सिर्फ तकनीकी प्रयोग दक्षता चाहता है। जबकि वह नहीं जानता कि जो बात पहले सीखी जा चुकी है, उसे स्मरण रखना ही स्मृति है। स्मृति एक जटिल शारीरिक और मानसिक प्रक्रिया है जब हम किसी वस्तु को देखते या सुनते हैं, तब हमारे ज्ञान-वाहक

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

Scanned with OKEN Scanner

34

UGC-CARE Listed Journal

ISSN No. 2277-2359

निबन्धमाला

परिसरीयशोधपत्रिका

मुख्यसम्पादकः

आचार्य ई.एम्. राजन्, निदेशकः

सम्पादकौ

आचार्यः के.के. हर्षकुमारः

डा. श्रीनिवासन् पि.के.

द्वादशं पुष्पम् (वर्षम् - २०२२)

A NAAC

आजादी का अमृत महोत्सव

गुरुवायूर्-परिसरः

केन्द्रीय-संस्कृत-विश्वविद्यालयः

पुरनाट्टुकरा, त्रिशूर्, केरलम् - ६८० ५५१

Scanned with OKEN Scanner

योगः

62. हठयोगः न तु गृहस्थाय - डा. श्रीनिवासन् पी.के. 441

शिक्षाशास्त्रम्

63. याज्ञवल्क्यशिक्षायाम् शिक्षणाधिगमप्रक्रिया - डा.डि. वेणुगोपाल रावः........ 447
64. संस्कृतेन पठनचिन्तम्- डा ललित मोहन पन्तोला........ 455
65. Inclusive Education in the Indian Context: Challenges and Prospects - Dr.P.Shankar & Dr.G.Madhukar....... 464
66. राष्ट्रीयशिक्षानीतौ संस्कृतस्य स्थानं महत्त्वञ्च - डॉ. सुनील कुमार शर्मा 471

आङ्गली

67. Major Traditional families in Kerala - Sarath T.R........ 478

हिन्दी

68. स्त्री स्वत्वनिर्माण और हिन्दी उपन्यास - डॉ. सिन्धु ए 483
69. द्रौपदी खण्ड काव्य में अभिव्यक्त मिथक और स्त्री - उमामहेश्वरी वी.एम........ 498
70. कर्मयोग शास्त्रः व्यावहारिक जीवन में - डॉ. रम्या पी.आर........ 556

मलयालम्

71. മഞ്ഞ് -നോവലിലെ സംഗീതം - ശ്രീമതി ജെസ്സി കെ.എ........ 505
72. മലയാളകാവ്യഭാവനയിലെ കൃഷ്ണസങ്കല്പത്തിൻറെ വളർച്ച സുഗതകമാരിക്കവിതയിൽ - ഡോ. കവിതാരാമൻ 513
73. മലയാളനാട്ടിലെ വിഷുവുത്സവവും മറുനാടരുടെ കൊയ്ത്തുത്സവങ്ങളും - ഡോ.സന്തോഷ് സി.ആർ. 523
74. ആധുനികവത്കരിക്കപ്പെടുന്ന ആശയവിനിമയതത്വങ്ങളും ഭാരതീയ കാഴ്ച്ചപ്പാടും - രതി എ 533

कम्प्यूटर्

75. Excellent Document Editing Software - Manichithra PS........ 546
76. P-NP PROBLEMS - Nisha Vinod........ 551

राष्ट्रीयशिक्षानीतौ संस्कृतस्य स्थानं महत्त्वञ्च

डॉ. सुनील कुमार शर्मा[1]

सारांशः (Abstract)-

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते ।
तत्स्वयं योगसंसिद्धः कालेनात्मनि विन्दति ॥[2]

श्रीमद्भगवद्गीतायां भगवता श्रीकृष्णेन ज्ञानस्य महत्त्वं तस्यासदृशपावनत्वञ्चैतादृशं प्रतिपादितम्। ज्ञानेन हि मनुष्यः स्वजीवनस्य लक्ष्यनिर्धारणे तत्पूर्त्यै च प्रयत्नशीलो भवति। ज्ञानमिति शब्दः खलु सापेक्षत्वं वहति। तत्कथनेनैवापेक्षा भवति यत् किं ज्ञानम्? कस्य ज्ञानम्? केन ज्ञानम्? कस्मै ज्ञानमिति? एतेषां प्रश्नानामुत्तरप्राप्तिसमये निश्चितम्भवति यदस्य शब्दविशेषस्य अर्थनिर्धारणे काचन एका प्रक्रिया अभिलक्षिता भवति सा उच्यते खलु शिक्षा। शिक्षायाः स्वरूपनिर्धारणे उपर्युक्तप्रश्नानामावश्यकता तेषामुत्तरप्राप्तिश्च 'अपेक्षिते भवतः। प्रक्रियायाम् अस्यां कश्चन क्रमो भवति। येन स्तरानुगुणं, कालानुगुणं समाजानुगुणञ्च एषा व्यवह्रियमाणा भवति सा एव शिक्षा पद्धतिरित्युच्यते । अतः प्रस्तुतोऽयं शोधालेखे राष्ट्रीयशिक्षानीतौ (२०२०) संस्कृतस्य महत्त्वं प्रतिपादितम् ।

प्रमुखशब्दाः- शिक्षानीतिः, संवर्धनम्, पाण्डुलिपयः, भाषीशिक्षणम्, भारतीयभाषाः, संस्कृतम्।

भूमिका

व्याकरणशास्त्रे शिक्षेति शब्दस्य त्रिधाव्युत्पत्तिर्दृश्यते भ्वादिगणीयः शिक्षा विद्योपादने इत्यस्माद्धातोः, स्वादिगणीयः शक्लृशक्तौ इत्यस्माद्धातोः, दिवादिगणीयः शक् इत्यस्माच्च धातोः मर्षणेच्छाविशेषार्थे । शिक्षणं शिक्षा इति ऋग्वेदस्य पञ्चममण्डले एकोनषष्टितमे सूक्ते वर्णितम्-

[1] सहायकाचार्यः (शिक्षापीठम्), श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, (केन्द्रीयविश्वविद्यालयः), नवदेहली-16.

[2] श्रीमद्भागवद्गीता.4 / 38

Scanned with OKEN Scanner

ONLINE ISSN: 2582-0095 **Impact Factor : 6.246**

Gyanshauryam
International Scientific Refereed Research Journal

website : www.gisrrj.com

Certificate of Publication

Ref : GISRRJ/Certificate/Volume 6/Issue 2/795 10-Apr-2023

This is to certify that the research paper entitled

चिन्ताऽवसादयोः स्वरूपं यौगिक समाधानानि च

डॉ. सुनील कुमार शर्मा
सहायकाचार्यः, शिक्षापीठः, श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालय, नवदेहली

After review is found suitable and has been published in the Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal(GISRRJ), Volume 6, Issue 2, March-April 2023. [Page No : 80-84]

This Paper can be downloaded from the following GISRRJ website link

https://gisrrj.com/GISRRJ23631

GISRRJ Team wishes all the best for bright future

Peer Reviewed and Refereed International Journal

Editor in Chief
Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal

Associate Editor
GISRRJ

Scanned with OKEN Scanner

Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2023 GISRRJ | Volume 6 | Issue 2 | ISSN : 2582-0095

चिन्ताऽवसादयोः स्वरूपं यौगिक समाधानानि च

डॉ. सुनील कुमार शर्मा
सहायकाचार्यः, शिक्षापीठः, श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालय, नवदेहली

Article Info
Volume 6, Issue 2
Page Number : 80-84

Publication Issue :
March-April-2023

Article History
Accepted : 01 April 2023
Published : 10 April 2023

शोधसार: (Abstract) - "चिन्ताचिता द्वयोर्मध्ये चिता एव बलीयसी।" इति सूक्तिः सुप्रसिद्धा वर्तते यतोहि चिता तु देहं दहति परन्तु चिन्ता जीवितं मानवमेव दहति। वस्तुतः अस्माकं मानवजीवने काश्चन् मनोवैज्ञानिकसमस्याः अनुभूयन्ते, यथा- मानसिक तन्यता, चिन्ता, अवसाद, व्यसनमित्यादयाः। एताः मानसिकसमस्याः भवन्ति, एतासां रूपं न भवति, बर्हितः द्रष्टुमशक्याः भवन्ति। मानवस्य व्यवहारेण, क्रियाकलापेन, नकारात्मकचिन्तनेनैव एतादृशानां समस्यानामाभिज्ञानं भवितुमर्हति। एवञ्च एतादृशानां मनोवैज्ञानिकसमस्यानामुपचारोऽपि अतिकठिनं भवति। कदाचित् योगमाध्यमेन एतादृशी समस्यानामुपरि विजयं प्राप्तुं शक्नुमः, इति धिया शोधलेखेऽस्मिन् द्वे मनोवैज्ञानिकसमस्ये स्वीक्रियेते - चिन्ताऽवसादश्च। उभयोः स्वरूपस्य, परिभाषाणां, लक्षणानां कारणानाञ्च चिन्तनं शोधलेखेऽस्मिन् करिष्यते, सहैव यौगिक क्रियाभिः, आसनेभ्यः कथं एतयोः उभयोः समाधानानि भवितुमर्हन्ति, इत्यस्मिन् सन्दर्भेऽपि चिन्तनमस्य शोधलेखस्य मुख्योद्देश्यमस्ति।

मुख्यशब्दाः- चिन्ता, भावनात्मका, व्याकुलः, यौगिक, अवसादः, विद्वांसः।

विषय प्रवेशः - चिन्ता वस्तुतः एका दुःखद भावनात्मका स्थितिर्भवति यया मानवः एकप्रकारकाज्ञातभयेन ग्रस्तः भवति, व्याकुलः अप्रसन्नश्च तिष्ठति। चिन्ता वस्तुतः व्यक्तेः भविष्यकाले आगम्यमानानां कस्यापि भीतियुक्तसमस्यां प्रति सजगतायुक्तं संकेतं भवति। चिन्तया न केवलं अस्माकं दैनन्दिनजीवनस्य क्रियाकलापाः प्रभाविताः भवन्ति, अपितु अस्माकं निष्पादनं, बुद्धिमत्ता, सर्जनात्मकता इत्यादयाः अपि नकारात्मकरूपेण प्रभाविताः भवन्ति। एतद्ऽपि वक्तुं शक्नुमः यत् अत्यधिक चिन्ताकारणेन मानवस्य व्यक्तित्त्वमपि अत्यन्तं प्रभावितं भवति, सः किमपि कार्यं सम्यक् रूपेण कर्तुं न पारयति। विविध मनोवैज्ञानिकैः चिन्ता स्व-स्वमतानुसारेण परिभाषिता, यथा-

फ्रायड महोदयानुसारेण-

"चिन्ता एका एतादृशी भावनात्मिका दुःखदाश्च अवस्था भवति, या मानवस्य अहं इत्यमुमागामि समस्यया जागरयति, येन मानवः वातावरणेन सह अनुकूलतया व्यवहारं कर्तुं समर्थः भवेत्। "

अमेरिकन साइकेट्रिक एसोशियेन एवं बारलोव महोदयानुसारेण -

"चिन्ता एका एतादृशी मनोदशा विद्यते, यस्याः अभिज्ञानं चिन्हित नकारात्मक प्रभावेन, तनावस्य शारीरिकलक्षणेभ्यः, लाभवित्यं प्रति भयेन क्रियते।"

मनोवैज्ञानिकानामनुसारेण चिन्तायाः लक्षणानि एवं भवितुमर्हन्ति -

- दैहिकलक्षणानि
- सांवेगिक लक्षणानि

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

Scanned with OKEN Scanner

ISSN No : 2581-6306

website : http://shisrrj.com

Impact Factor : 6.154

Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal

Certificate of Publication

Ref : SHISRRJ/Certificate/Volume 6/Issue 1/905

20-Jan-2023

This is to certify that the research paper entitled

भाषा शिक्षकस्य भूमिका

डॉ. सुनील कुमार शर्मा

सहायकाचार्यः,शिक्षापीठः, श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालय, नवदेहली

After review is found suitable and has been published in the Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal(SHISRRJ), Volume 6, Issue 1, January-February 2023. [Page No : 146-149]

This Paper can be downloaded from the following SHISRRJ website link

https://shisrrj.com/SHISRRJ23659

SHISRRJ Team wishes all the best for bright future

Editor in Chief
SHISRRJ

Associate Editor
SHISRRJ

Peer Reviewed and Refereed International Journal

73

Scanned with OKEN Scanner

Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal 74
© 2023 SHISRRJ | Volume 6 | Issue 1 | ISSN : 2581- 6306

भाषा शिक्षकस्य भूमिका

डॉ. सुनील कुमार शर्मा
सहायकाचार्यः,शिक्षापीठः, श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालय, नवदेहली

Article Info

Publication Issue :
January-February-2023
Volume 6, Issue 1

Page Number : 146-149

Article History
Received : 01 Jan 2023
Published : 20 Jan 2023

शोधसारः (Abstract)-"श्लिष्टा क्रिया कस्यचिदात्मसंस्था, संक्रान्तिरन्यस्य विशेष युक्ता। यस्योभयं स हि साधु शिक्षकाणां, धुरिः प्रतिष्ठापयितव्य एव।।" मालविकाग्निमित्रनामके ग्रन्थे कालिदासेन स्पष्टमुल्लिखितं यत् यः शिक्षकः विषयवस्तुनः ज्ञानं सम्यक्तया धारयति एवञ्च यदि तस्य सम्प्रेषणकौशलं प्रभावि भवति, तर्हि सः साधु अर्थात् उत्तमः शिक्षकः भवति। अर्थात् शिक्षकः उभयतया निपुणं स्यात्। विषयवस्तुनः ज्ञानेन सह सम्प्रेषणकलामपि जानीयात्। भाषा शिक्षकस्य दायित्वमितोऽपि अधिकं भवति। सः यां भाषां पाठयति, तस्यां भाषायामपि पूर्णाधिकारः भवेत्। भाषा शिक्षकः कस्याऽपि भाषायाः भवेत्। हिन्दी- आंग्ल संस्कृत अथवा अन्यां कामपि भाषायां पाठयेत्, अन्याध्यापकानां अपेक्षया तस्य भूमिका विशिष्टा भवति। छात्राणां योग्यतानां क्षमतानां विकासेन सह तान् भाषाविषये दक्षमपि करणीयं भवति, येन सः समाजे, कस्मिन् अपि मञ्चे स्वीयवक्तव्यं स्पष्टतया कथयितुं शक्नुयात्। स्वीय लेखनीमाध्यमेन साहित्यस्य वर्धनं कुर्यात्। सर्वेषां भाषाध्यापकानां पाठनाय केचन सामान्य निर्देशाः भवन्ति, तेषां केचन गुणविशिष्टाः भवन्ति एवञ्च कक्षा कक्षे तेषां बहुनि करणीयानि कार्याणि भवन्ति, येन छात्राः सुगमतया भाषाऽधिगमे तत्पराः भवन्ति। शोधपत्रेऽस्मिन् भाषा शिक्षकस्य भूमिका, तस्य गुणाः, तस्य विशिष्टकार्याणामुपरि चिन्तनं करिष्यते-

मुख्यशब्दाः-भाषा, छात्राः, गुणाः, शिक्षकः, धुरिः, नियोजनम्, व्यवस्थापनम्, अग्रसरणम् , नियन्त्रणम्।

विषय प्रवेशः -आंग्ल भाषायामुक्तमस्ति - "A Teacher should be a friend, philosopher and guide." अर्थात् शिक्षकेण कक्षायां तिसृणां भूमिकानां निर्वहनं करणीयं भवति - दार्शनिकस्य, निर्देशकस्य, मित्रस्य। दार्शनिकेन तात्पर्यमस्ति विषये स्वामित्वम् अर्थात् विषयाधिकारः शिक्षकस्य अवश्यमेव भवेत्। निर्देशकरूपेण तस्य कर्तव्यं भवति - छात्राणां समस्यानां क्लिष्टतानाञ्च निवारणम् एवं छात्राणां साहाय्यं शिक्षकेण मित्रवत् करणीयं येन छात्राः भीताः न भवेयुः, सारल्येन विषयावगमने समर्थाः स्युः। आंग्लभाषायां शिक्षकस्य कृते पदद्वयं प्रयुक्तमस्ति- 'जॉनलैटिन' जॉन इति पदेन तात्पर्यं भवति -छात्र एवं लेटिन इति पदेन तात्पर्यं भवति विषयवस्तुनः ज्ञानम्। अर्थात् शिक्षकेन स्वीय छात्राणां विषये अधिकाधिकतया संज्ञानं भवेत् एवञ्च स्वीयविषयोपरि सम्पूर्णाधिकारः भवेत्। तदेव सः प्रभावशाली शिक्षकः भवितुर्महति। भाषायाः शिक्षकस्य कृते भाषायाः ज्ञानं, बोधः, कौशलञ्च एते त्रयाः अंशाः आवश्यकाः भवन्ति एवञ्च शिक्षकेभ्य व्याकरण-साहित्य-गद्य-पद्य-नाटक-कथादीनां सम्यक् ज्ञानं बोधश्च भवेत् सहैव सौन्दर्यानुभूतेः रसानुभूतेः समालोचनायाश्च योग्यता भवेत्।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

Scanned with OKEN Scanner

ISSN 2454-1230

सप्तदशोऽङ्कः, XVIIth Issue

जनवरी - जून , 2023

January - June, 2023

शिक्षाप्रियदर्शिनी

अन्ताराष्ट्रिया समकक्षव्यक्ति-समीक्षिता

बहुभाषी-षाण्मासिक-शोधपत्रिका

SHIKSHA PRIYADARSHINI

(An International Peer-Reviewed Multi-Lingual)
Half-Yearly Research Journal)

Jai माता दी

मुख्यसंरक्षकः

प्रो. श्रीनिवास वरखेडी

संरक्षकः

प्रो. राधागोविन्दत्रिपाठी

प्रधानसम्पादकः

प्रो. पवनकुमारः

प्रबन्धसम्पादकौ

प्रो. अंजूसेठः

श्री अरूणकुमारमंगलः (अधिवक्ता)

Scanned with OKEN Scanner

15. शिक्षा - एक नवीन मन के सर्जन प्रक्रिया 95
रजनीश पाण्डेय
16. अथर्ववेद में जल चिकित्सा 101
वेणुधर दाश
17. सतत विकास एक मूल्यांकन (पर्यावरण के विशेष संदर्भ में) 107
डॉ. राजेश मौर्य
18. राजस्थानीय संस्कृत उपन्यासों में निरूपित भारतीय संस्कृति और नारी 117
रवि शंकर शर्मा
19. भारतीय दर्शन का आधार : जिज्ञासा 122
श्रीमती डिम्पल जैसवाल
20. कर्तव्यनिष्ठ श्री रामदूत हनुमान 128
डॉ. विकास चौधरी
21. नैषधीय चरित में समग्र स्वास्थ्य और कल्याण के लिए प्रदत्त योगशास्त्रीय विचारों का परिशीलन 135
डॉ. कृष्ण चन्द्र पण्डा
22. बुंदेली लोक गीतों में राम 141
डॉ. रमा आर्य
23. उच्च शिक्षा में परिवर्तन संबंधी विश्लेषण: राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के संदर्भ में 150
डॉ. अजय कुमार
24. शांखायन ब्राह्मण में प्राणविद्या का स्वरूप 159
डॉ. निधि वेदरत्न
25. Buddhist Vipassana: A Meditative Way of Human Well-Being 164
Dr. Minakshi Sethy
26. Sociology of Development 172
Dr. Arti Sharma
27. Constructivist Language teaching Methods 176
Dr. Ekkurti Venkatswarlu
28. Internationalisation Of Higher Education: An Instrument for Soft Power Diplomacy 182
Thiyagarajan M
29. Four Types of Yoga in Yogatattva-Upaniṣad 193
Sujata Jena
30. Awakening Kuṇḍalinī in Yogakuṇḍalinī Upaniṣad 206
Sagar Mantry
31. Yoga for Human Intelligence Development 218
Ganta Naga Swathi

Scanned with OKEN Scanner

शिक्षाप्रियदर्शिनी
(अन्ताराष्ट्रिया समकक्षव्यक्ति-समीक्षिता
बहुभाषीयशोधपत्रिका)
सप्तदशोऽङ्कः, जनवरी-जून, 2023
ISSN : 2454-1230

बहुभाषिकता

डॉ. सुनील कुमार शर्मा
सहायकाचार्य, शिक्षाशास्त्रविभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय (केन्द्रीयविश्वविद्यालय), नई दिल्ली

शोधसार

भारत एक बहुधर्मी, बहुसांस्कृतिक एवं बहुभाषाई जन देश है। अतः इस देश के छात्रों को एक से अधिक भाषाएँ सीखनी होती हैं। दो राज्यों की सीमाओं पर रहने वाले व्यक्ति दो-तीन अथवा कभी-कभी चार-चार भाषाएँ तक बोलते हैं। यही बहुभाषिकता है अर्थात् मातृभाषा से आरम्भ करके अन्य भाषाओं की ओर बढ़ना, उनमें मौखिक - लिखित व्यवहार करना सीखना ही बहुभाषिकता है। बहुभाषिकता की स्थिति तब बनती है जब व्यक्ति किसी ऐसे समाज में रहता है जो उसकी मातृभाषा से अलग भाषा बोलता है और उस समाज में रहते हुये वह अन्य भाषा में इतना पारंगत हो जाता है कि उस भाषा का प्रयोग मातृभाषा की तरह कर सकता है। बहुभाषिक व्यक्ति अनेक भाषाओं का ज्ञान रखते हैं जो उन्हें विभिन्न माध्यमों, व्यापार और संगठनों, विभिन्न संस्थाओं और लोगों से जुड़े रहने में मदद करता है। उनकी संचार क्षमताओं को बढ़ाता है, जिससे वे विभिन्न भाषाओं में संवाद करने में सक्षम होते हैं। प्रस्तुत शोध लेख में हम बहुभाषिकता के विविध पक्षों पर चिन्तन करेंगें।

विषयप्रवेश

संकेतों के द्वारा सम्प्रेषण होते हुये भी मौखिक तथा लिखित भाषा ही मनुष्यों में सम्प्रेषण का एक श्रेष्ठ माध्यम है। व्यक्तियों के व्यवहार को नियंत्रित करने के लिए भाषा हर प्रकार से एक शक्तिशाली प्रविधि है। भाषा के समान शक्तिशाली कोई भी ऐसी चीज नहीं है जिसकी खोज मनोवैज्ञानिक अपनी प्रयोगशाला में कर सकें। भाषा शब्द संस्कृत की 'भाष्' धातु से बना है, जिसकी व्युत्पत्ति 'वाक् व्यक्तायां वाचि' अर्थात् प्रकट की गई या उच्चारित की गई वाणी है। कुप्पूस्वामी जी ने भाषा को इस प्रकार परिभाषित किया है- "सम्प्रेषण के एक परम्परागत प्रतीकों के माध्यम के रूप में भाषा को परिभाषित किया जा सकता है।
(Language may be defined as a system of communication through conventional symbols)

हिन्दी के महान विद्वान श्री रामचन्द्र वर्मा ने भाषा को परिभाषित करते हुये कहा है- "मुख से उच्चरित होने वाले शब्दों और वाक्यों आदि का समूह जिसके द्वारा मन की बात बतलाई जाती है, भाषा कहलाती है।" श्री कामता प्रसाद जी ने भी भाषा को परिभाषित करते हुये कहा है कि - "भाषा वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचार दूसरों के समक्ष भली भाँति प्रकट कर सकता है और दूसरों के विचार स्वयं स्पष्टतया समझ सकता है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि भाषा सम्प्रेषण का एक माध्यम है। समाज की संरचना, संस्कृति का निर्माण, परस्पराएं और मनुष्य की सभ्यता आदि सब कुछ हमारी भाषा पर ही आधारित हैं। भाषा में ध्वनि-संकेतों का प्रयोग होता है जो रूढ एवं परम्परागत होते हैं,

Scanned with OKEN Scanner

ISSN 2454-1230

नवदशोऽङ्कः, XIXth Issue

जनवरी - जून , 2024

January - June, 2024

शिक्षाप्रियदर्शिनी

अन्ताराष्ट्रिया समकक्षव्यक्ति-समीक्षिता

बहुभाषी-षाण्मासिक-शोधपत्रिका

SHIKSHA PRIYADARSHINI

(An International Peer-Reviewed Multi-Lingual)
Half-Yearly Research Journal)

प्रो. श्रीनिवास वरखेडी

प्रो. राधागोविन्दत्रिपाठी

प्रधानसम्पादकः

प्रो. पवनकुमारः

प्रबन्धसम्पादकौ

प्रो. अंजूसेठः

श्री अरूणकुमारमंगलः (अधिवक्ता)

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रमणिका

(108) 108

सम्पादकीय
प्रबन्ध सम्पादकीय
शुभकामनासन्देशः
शिक्षाप्रियदर्शिनी के गत अंक- 18 की समीक्षा

1. तिङर्थनिरूपणम् ……… डॉ. सुधाकरमिश्रः 1
2. व्याकरणशास्त्रस्य संक्षिप्तेतिहासः ……… डॉ. शिवदत्त आर्यः 7
3. शिक्षाक्षेत्रे ऐतिहासिकानुसन्धानोपागमः ……… डॉ. आरती शर्मा 20
4. दार्शनिकानुसन्धानोपागमः ……… डॉ. सुनीलकुमारशर्मा 26
5. दर्शनान्तरेषु पदार्थतत्त्वनिर्वचनम् ……… डॉ. जगत् ज्योतिपात्रः 31
6. उपमास्वरूपविमर्शः ……… डॉ. सौरभदुबे 37
7. मानवजीवने आत्मानुशासनाय संस्कृतस्य उपादेयता ……… डॉ. प्रज्ञा 44
8. अप्पयदीक्षितस्य व्याकरणवैभवम् ……… मनोजकुमारगुप्ता 48
9. महाभाष्यप्रदीपव्याख्यातृपरिचयः ……… शङ्खशुभ्रगच्छितः 55
10. बृहत्संहितायां निरूपितो भूकम्पविचारः ……… दिवाकरशर्मा 66
11. मनुस्मृतौ वर्णिताः दण्डस्य प्रकाराः ……… ध्वनिका सूद 71
12. व्यक्तित्वप्रक्षेषु रुचेः महत्त्वम् उपयोगश्च ……… ज्योतिनाथः 79
13. पूर्वकारिकोक्तरीत्या अग्निमुखविधिः एकम्– परिशीलनम् ……… श्री विष्णुदास देशपाण्डे 85
14. सिद्धान्तज्यौतिषे अक्षक्षेत्राणां महत्त्वम् ……… गिरीशभट्टः बि. 96
15. अधिगम व्यवहार सम्बद्ध उपकरण निर्माण एवं अध्ययन ……… डॉ. नितिन कुमार जैन एवं दुर्गेश त्रिपाठी 105
16. विश्व में वैदिक ज्ञान 'योग' का नवप्रवर्तनीय उपयोग ……… डॉ. विकास शर्मा 112
17. आधिदैविक एवं आधिभौतिक दुःखों के याज्ञिक उपचार ……… ड़ॉ. वेणुधर दाश 122
18. महाभारत में पर्यावरण चेतना ……… नकुल कुमार साहु 127
19. स्वास्थ रहने के लिए प्राणायाम की प्रासंगिकता (योगशास्त्र के अनुसार अभ्यास) ……… दिवाकर शर्मा 132
20. भारतीय संस्कृति में यज्ञ का महत्त्व ……… कणिका 140
21. भारतीय ज्ञान परम्परा का वैविध्य ……… डा. वीणा मिश्रा 144
22. Efficacy of multiple intelligence-based instruction models for school teaching ……… Prof. K. Ravishankar Menon, Dr Suneel Kumar Sharma & Sanjay Bhardwaj 151
23. Importance of Mitāhār in Yoga Philosophy ……… Prof. Subash Ch. Dash & Sagar Mantry 158

Scanned with OKEN Scanner

शिक्षाप्रियदर्शिनी
(अन्ताराष्ट्रिया समकक्षव्यक्ति-समीक्षिता बहुभाषीयशोधपत्रिका)
नवदशोऽङ्कः, जनवरी-जून, 2024
ISSN: 2454-1230

दार्शनिकानुसन्धानोपागमः

डॉ. सुनील कुमार शर्मा
सहायकाचार्यः (शिक्षापीठम्)
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः, नवदेहली

शोधसारः

"The problems are solved, not by giving new information, but by arranging what we have known since long. Philosophy is a battle against the bewitchment of our intelligence by means of language." (Ludwig Wittgenstein)

वस्तुतः अनुसन्धाने व्यक्तिः स्वजिज्ञासायाः अनुरूपं गहनाध्ययनं करोति। तस्य जिज्ञासायाः आधारः दार्शनिकं भवितुमर्हति, मनोवैज्ञानिकमपि, सामाजिकम् अथवा ऐतिहासिकमपि भवितुमर्हति। सः स्वचयनितक्षेत्रे सम्बन्धितज्ञानस्य स्पष्टीकरणं करोति, प्राप्तज्ञानस्य सत्यापनं करोति। नूतनासिद्धान्तानां निर्माणं एवञ्च पुरातनसिद्धान्तानां सत्यतायाः परीक्षणमेवानुसन्धानं भवति। सामान्यतः शिक्षायाः पक्षद्वयं भवति-सैद्धान्तिकं व्यावहारिकञ्च। सैद्धान्तिकपक्षे 'किमस्ति' 'किमर्थमस्ति' इत्यादयाः प्रश्नाः सन्निहिताः भवन्ति, यथा शिक्षाक्षेत्रे पश्यामश्चेत् का नाम शिक्षा? शिक्षायाः प्रक्रिया काः? प्रमुखाः विचारधाराः काः? शिक्षायां के के आदर्शाः मानदण्डाश्च स्वीकर्तव्याः? कीदृशमनुशासनमुपयुक्तं भविष्यति? इत्यादि प्रश्नाः सैद्धान्तिकपक्षेण सम्बधिताः सन्ति। एतेषु दार्शनिकपृष्ठभूमिः समाहिता भवति एवञ्च एतादृशानां प्रश्नानां समाधानानि दार्शनिकानुसन्धानोपागमसाहाय्येन प्राप्तुं शक्यन्ते। दार्शनिकानुसन्धानं चिन्तन - जिज्ञासा - निष्पक्षता - अनुभव - बुद्धि - तर्केण च निर्देशिता च एतादृशी प्रक्रिया वर्तते या सत्यान्वेषणे अनवरततया संलग्ना भवति। प्रस्तुतशोधपत्रे दार्शनिकानुसन्धानोपागमस्यार्थः, आवश्यकताः, प्रक्रिया, सोपानानि एवञ्च वैशिष्ट्य विषये चर्चा करिष्यते।

कूटशब्दाः:- शिक्षा, अनुसन्धानम्, दार्शनिकः, वादः, अनुसन्धानोपागमाः, समस्यायाः चयनम्, सङ्कलनं विश्लेषणं प्रस्तुतीकरणञ्च।

प्रस्तावना

दर्शनं ज्ञानसत्ययोः प्रति अनुरागं विद्यते यस्योद्देश्यमस्ति सृष्टौ व्याप्तस्यान्तिमस्य सत्यस्यान्वेषणम् एवञ्च तस्य व्यवस्थितमध्ययनम्। दार्शनिकानुसन्धानोपागमः तादृशः उपागमः अस्ति यस्मिन् जनस्य अथवा समुदायस्य शैक्षिक विचारेषु निहितानां दार्शनिकानामथवा सैद्धान्तिकानां पक्षाणामध्ययनं क्रियते। सत्यस्य नियमानाम् एवम् अस्तित्वस्य सिद्धान्तानां प्रतिपादनं क्रियते एवञ्च बौद्धिकस्तरे तार्किकरूपेण तेषां चिन्तनं विवेचनञ्च क्रियते। दार्शनिकानुसन्धानोपागमे विशेषरूपेण जीवनस्य

नवदशोऽङ्कः जनवरी-जून, 2024 ISSN No: 2454-1230

शिक्षाप्रियदर्शिनी

अन्ताराष्ट्रिया समकक्षव्यक्ति-समीक्षिता बहुभाषी-षाण्मासिक-शोधपत्रिका

SHIKSHA- PRIYADARSHINI

(An International Peer-Reviewed Multi-Lingual Half-Yearly Research Journal)

मुख्यसंरक्षकः
प्रो. श्रीनिवास वरखेड़ी

संरक्षकः
प्रो. राधागोविन्दत्रिपाठी

प्रधानसम्पादकः
प्रो. पवनकुमारः

सम्पादकौ
डॉ. नितिनकुमारजैनः
डॉ. आरती शर्मा

प्रबन्धसम्पादकौ
प्रो. अञ्जूसेठः
श्री अरुणकुमामंगलः (अधिवक्ता)

प्रकाशकः
संस्कृतसंस्कृतिविकाससंस्थानम्
बाडी, धौलपुरम्, राजस्थानम् – 328021

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रमणिका

सम्पादकीय

प्रबन्ध सम्पादकीय

शुभकामनासन्देशः

शिक्षाप्रियदर्शिनी के गत अंक- 18 की समीक्षा

1. तिङर्थनिरूपणम् .... डॉ. सुधाकरमिश्रः 1
2. व्याकरणशास्त्रस्य संक्षिप्तेतिहासः .... डॉ. शिवदत्त आर्यः 7
3. शिक्षाक्षेत्रे ऐतिहासिकानुसन्धानोपागमः .... डॉ. आरती शर्मा 20
4. दार्शनिकानुसन्धानोपागमः .... डॉ. सुनीलकुमारशर्मा 26
5. दर्शनान्तरेषु पदार्थतत्त्वनिर्वचनम् .... डॉ. जगत् ज्योतिपात्रः 31
6. उपमास्वरूपविमर्शः .... डॉ. सौरभदुबे 37
7. मानवजीवने आत्मानुशासनाय संस्कृतस्य उपादेयता .... डॉ. प्रज्ञा 44
8. अप्पयदीक्षितस्य व्याकरणवैभवम् .... मनोजकुमारगुप्ता 48
9. महाभाष्यप्रदीपव्याख्यातृपरिचयः .... शङ्खशुभ्रगच्छितः 55
10. बृहत्संहितायां निरूपितो भूकम्पविचारः .... दिवाकरशर्मा 66
11. मनुस्मृतौ वर्णिताः दण्डस्य प्रकाराः .... ध्वनिका सूद 71
12. व्यक्तित्वपक्षेषु रुचेः महत्त्वम् उपयोगश्च .... ज्योतिनाथः 79
13. पूर्वकारिकोक्तरीत्या अग्निमुखविधिः एकम्– परिशीलनम् .... श्री विष्णुदास देशपाण्डे 85
14. सिद्धान्तज्यौतिषे अक्षक्षेत्राणां महत्त्वम् .... गिरीशभट्टः बि. 96
15. अधिगम व्यवहार सम्बद्ध उपकरण निर्माण एवं अध्ययन .... डॉ. नितिन कुमार जैन एवं दुर्गेश त्रिपाठी 105
16. विश्व में वैदिक ज्ञान 'योग' का नवप्रवर्तनीय उपयोग .... डॉ. विकास शर्मा 112
17. आधिदैविक एवं आधिभौतिक दुःखों के याज्ञिक उपचार .... डॉ. वेणुधर दाश 122
18. महाभारत में पर्यावरण चेतना .... नकुल कुमार साहु 127
19. स्वास्थ रहने के लिए प्राणायाम की प्रासंगिकता (योगशास्त्र के अनुसार अभ्यास) .... दिवाकर शर्मा 132
20. भारतीय संस्कृति में यज्ञ का महत्त्व .... कणिका 140
21. भारतीय ज्ञान परम्परा का वैविध्य .... डा. वीणा मिश्रा 144
22. Efficacy of multiple intelligence-based instruction models for school teaching .... Prof. K. Ravishankar Menon, Dr Suneel Kumar Sharma & Sanjay Bhardwaj 151
23. Importance of Mitāhār in Yoga Philosophy .... Prof. Subash Ch. Dash & Sagar Mantry 158

शिक्षाप्रियदर्शिनी
(अन्ताराष्ट्रिया समकक्षव्यक्ति-समीक्षिता
बहुभाषीयशोधपत्रिका)
नवदशोऽङ्कः, जनवरी-जून, 2024
ISSN: 2454-1230

(117)

117

Efficacy of Multiple Intelligence Based Instruction Models for School Teaching

Prof. K. Ravishankar Menon
Former Prof, HOD and Dean, Faculty of Education,
National Sanskrit University, Tirupati, Andhra Pradesh
Dr Suneel Kumar Sharma
Assistant Prof. Department of Education
Shri Lal Bahadur Shastri National Sanskrit University, New Delhi-110016
Sanjay Bhardwaj
Ph.D. Research Scholar, Singhania University, Rajasthan, India

Abstract:

Dr. Howard Gardner, professor of education at Harvard University, established the theory of Multiple intelligence after concluding that the traditional concept of intelligence based on Intelligence Quotient I.Q. was too restrictive. This article is an attempt to comprehend Howard Gardner's concept of multiple intelligences as articulated in his book Frames of Mind: The Theory of Multiple Intelligences. Findings from related literatures on multiple intelligence have been studied to understand how it assisted teachers in understanding "how students learn" and how teachers developed more comprehensive learning strategies and the efficacy of such strategies to increase learning outcomes, particularly in school education. There has also been reference to literature on the influence on other areas of the student's personality. Furthermore, the implications of the peer-reviewed literature are offered in terms of effectiveness, future scope, and areas that need to be emphasised more.

Key words: multiple intelligence, Verbal-Linguistic Intelligence, Mathematical-Logical Intelligence, Musical Intelligence, Visual-Spatial Intelligence, Bodily-Kinaesthetic Intelligence, Interpersonal Intelligence, Intrapersonal Intelligence, naturalists and existential intelligence

Introduction:

For a long time, no one questioned the definition of intelligence in the fields of psychology and education. Intelligence was assumed to be the capacity that allowed for academic success, along with the linguistic and logic-mathematical skills required in a conventional classroom. The idea of evaluating a student's potential through IQ testing, also known as intelligence quotient testing, was founded on this

Scanned with OKEN Scanner